CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ
नमः॥
सिद्धेभ्यः॥श्री
अथ भक्तामर स्तोत्र की
टीका भाषा पैसहित लिष्य
ते॥काव्य॥भक्तामर: प्रणत
मौलिमणिप्रभाणा॥मुद्योतकं दलितपा
पतमोवितानं॥सम्यक्प्रणम्य जिनपाद युगंयु
गादा॥वालंबनं भवजले पततां जनानां॥१॥काव्य॥य
:संस्तुत: सकलवाङ्मयतत्वबोधा॥दुद्भूतबुद्धि
पटुभि: सुरलोकनाथै:॥स्तोत्रैर्जगत्त्रित
यचित्तहरैरुदारै:॥स्तोष्ये किला
हमपि तं प्रथमं जिनेंद्रं॥२॥
अर्थ॥जुगं॥कि
लज्जाइम
वि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(1) भक्तामर स्तोत्र
[illegible]

(2) [illegible] – [illegible]
(अ॰) [illegible]

(3) महाकवि [illegible]

(4) नेमिनाथ [illegible] – [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥भक्ताम॥ ॥२॥

मो तिनिजो है मुकुट तिन विषैं मणि तिनकी जो प्रभा ति
नका उद्योतक है कोटि स्फुरायमान है ॥ तथापि भगवान
के चरण नख की दीप्ति आगै वे मुकुट प्रभा करि रहि
त होय है ॥ तातें भगवान के चरण हूप उद्योतक हैं ॥ व
हुरि कैसे हैं ॥ दलित पाप तमो वितानं ॥ दलित दूरि करे
हैं पाप रूप तम कहै अंधकार ॥ ताको वितान समूह ॥
जानें ॥ वहुरि कैसे हैं चरण हूप युगादौ भवजले प
ततां जनानां ॥ आलंबनं ॥ युगादौ चतुर्थ काल की ॥
आदि विषैं भवजले संसार समुद्र विषैं पततां पडतौ
है जनानां मनुष्य तिनको आलंबनं ॥ आलंबन जो है
जिहाज ता समान है ॥ तिंकिं सो आदिनाथ कौं नवै ॥
ताकौं स्तोत्र मैं करूंगा ॥ स्तोत्रैः यः सुरलोकनाथैः सं
स्तुतः स्तोत्रै स्तोत्र करि यः जो श्री आदिनाथ सुरलोकनाथैः
सुरलोक देवलोक के नाथ तिन करि स्तुतः ॥ स्तुयमानः स्तवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ते
प्रथमं जि
नेंद्रं ॥ स्तोष्ये ॥ कि
ल निश्चयकर ॥ अहमपि
मैं भी जो हौं मानतुंग नामे आचा
र्य सो तं प्रथमं जिनेंद्रं ॥ सो जो है प्रथम
जिनेंद्र ॥ श्री आदिनाथ ताहि स्तोष्ये स्तवुंगा
काहा करिके स्तोत्रन करूंगा ॥ जिन पाद युगं ॥ सम्य
क् प्रणम्य ॥ जिन जो हैं भगवान तिनके पाद जुग दोय
चरण कमल ताहि सम्यक् भली भांति मन वचन का
य करि प्रणाम नमस्कार करिकैं ॥ कैसे है भग
वान के चरणद्वय ॥ भक्तामरप्रणत ॥
मौलिमणि प्रभाणां ॥ उद्योत
कं भक्तिवंत अमर जे
है देवता तिनके
नम्रीभूत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ अहो मैं मानतुंग ॥ बुद्ध्या विनापि ॥ बुद्धि विना ही स्तो
लुं ॥ तुम्हारी स्तुति करिवे कौं समुद्यत मति ॥ जो उद्यत म
ति हों उद्यमवान हौं ॥ कैसा हूं मैं ॥ विगतत्रपः ॥ विगत है
र नाहि है त्रपा जो लज्जा जाकी सो ऐसा हूं ॥ जातैं बुद्धि
बिना ही स्तुति करौं हौं ॥ जलसंस्थितं इंदु बिंबं सहसा
ग्रहीतुं ॥ बालं विहाय ॥ अन्यजनः कः इच्छति को पिन
जल विषै संस्थित तिष्ठै जो है चंद्रमा को प्रतिबिंब ॥ ता
हि सहसा ग्रहीतं ॥ जल दीपक ह्वैवे कौं ॥ बिलविहाय
बालक विना अन्यजनः और सुबुद्धी जन ॥ कः इच्छ
ति कौं न वांछै ॥ कोपिन ॥ कोई न वांछै बालक ही वां
छै है ॥ ऐसैं बालक मैं हौं ॥ ३ ॥ काव्य ॥ वक्तुं गुणान्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कैसे है ॥ सकलवाङ्मयतत्वबोधादुद्भूतबुद्धिपटु
भिः ॥ सकल समस्त जो है ॥ वाङ्मय द्वादशांग तिसके
जो तत्वस्वरूप तिसका जो बोध ज्ञान ॥ तातें उद्भूत उत्प
न्न भयो है प्रकट बुद्धि ताकरि पटुभिः प्रवीन है बैसे जो इन्द्र
कैसे है ॥ जिनकरि स्तोत्र तिकरूंगा ॥ जगत्त्रितयचित्तहरैः उ
दारैः ॥ जगत्त्रितय तीनजगतके जीवनके जु चित्त तिनकूं
हरै ॥ हरै है बहुरि कैसे है स्तोत्र उदारैः ॥ अर्थगंभीरताक
रि कैसे है ॥ २ ॥ काव्य ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपा
दपीठ ॥ स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोहं ॥ बालं वि
हाय जलसंस्थितमिंदु बिंबमन्यः क इच्छति जनः
सहसा ग्रहीतुं ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ हे विबुधार्चितपादपी
ठ ॥ विबुध जो है देवता तिन करि अर्चित पूजित
पादपीठ कहिये सिंहासन जाको ॥ असे जो है तुम
सो हे नाथ ॥ अहं बुद्ध्या विनापि ॥ स्तोतुं समुद्यतमति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कहै हैं॥ को वा तरीतुं अलं अंबुनिधिं तारिबेकूं समर्थ॥ कोन पु
रुष भुजाभ्यां॥ दोनों भुजान करि अंबुनिधि समुद्र कूं॥ त
रिबे कहिये॥ तिरिबेकों समर्थ है॥ कोई समर्थ नांही है॥ प
णि कैसो पुरुष बलवान कल्पकाल विषें अति प्रचंड है॥ तो भी
का हा समुद्र तिरे जो॥ नहीं तिरे गो॥ कैसा है समुद्र॥ कल्पां
त पवनोद्धत नक्रचक्रं॥ कल्पांतकाल जो है प्रलयकाल
तिसका जो पवन ताकरि उद्धत कहै उछले हैं नक्रचक्र जी
व जा विषें॥४॥ काव्य॥ सोहं तथापि तव भक्तिवशान्मु
नीश॥ कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः॥ प्रीत्यात्मवीर्य
मविचार्य मृगो मृगेंद्रं॥ नाभ्येति किं निजशिशोः परिपा
लनार्थं॥५॥ अर्थ॥ हे मुनीस्वर मुनिकुंके नाथ सोहं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न् गुणसमुद्र स्सांककांतान् ॥ कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रति
मोपि बुध्या॥ कल्पांत कालपवनोद्धत नक्रचक्रं॥ को वा त
रीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां॥४॥ अर्थ॥ हे गुणसमुद्र
हे गुणनके समुद्र॥ बुध्या सुरगुरु प्रतिमोपि॥ है करि
सुरगुरु जो है ब्रहस्पति॥ प्रतिमो तिनासारखो जो मनु
ष्य ते गुणान तुम्हारे जो है गुण तिनहि॥ वक्तुं कहिवेको
कः क्षमः को न समर्थ है॥ कोई नांही॥ कैसे है तुम्हारे गुण
शशांक जो है चंद्रमा ते सा कांतान् कहिए ऐसे सुन्दर है॥ भावार्थ
हे नाथ मैं मैं तुम तो बुद्धि करि हीन हों॥ अरु जो कोई म
हा बुद्धिवंत ब्रहस्पति तुल्य है॥ सो भी तुम्हारे गुण
कहिवेको समर्थ नांही॥ तो मेरी कहा वात॥ इहां दृष्टांत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

भक्तामर ॥

॥५॥

कौं आवै है ॥ तब तुम्हारे गुण कहिवेकौं समर्थ नाही है ॥ आग
नौं मरण नांही विचारै है ॥ वातैं भी निज अधिकता पर है ॥ तैसैं
हैं तुम्हारी भक्तिकी अधिकाईतातैं तुम्हारे स्तोत्र करिवेकौं उद्यम
वंत हौं ॥ अपनी हीन शक्ति नांही विचारौं हौं ॥ काव्य ॥ अ
ल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम ॥ त्वद्भक्तिरेव मुखरी
कुरुते बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति ॥ त
च्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतु ॥६॥ अर्थ ॥ तेरी भक्ति
मैं अल्पश्रुत हौं श्रुतवंतनि कै हास्यका धाम हौं ॥ परंतु तुम्हारी
भक्ति ही बलात् ॥ बलात्कार करि मोकौं ॥ मुखरी करै ते
वाचाल करै है ॥ जैसैं है ॥ कैसा कुं ॥ मधु ऋतु ॥ अर्थ
कोकिल मधुर शब्द करै है आम्र की मांजर का बडो हेतु है ॥ कैसा कुं ॥ अनुत

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विगतिशक्तिरहि॥ सोऽहं तदपि मैं ऐसा हूं विगतिशक्ति
भी हो॥ तथापि तौ भी प्रीतिवशात्॥ तुम विषै जो है भक्ति
श्री तिताके वशात्तैं॥ तव स्तवं कर्तुं तव तुम्हारे स्तवन
कौं कर्तुं करिवे कौं प्रवृत्तः प्रवृत्त हौं॥ अयमर्थ करतु हूं प्रवृ
त्तं तत्पर हूं॥ मृगः मृग जो है हिरण सो निज शिशोः पारि
पालनार्थं निज अपनो जो है॥ शिशु बालक ताके परिपा
लनार्थं पालिवे कौं निमित्त जीत्या करि हैं॥ प्रीति करि॥
आत्मवीर्यं अविचार्य॥ आत्मवीर्य अपने बल कौं अवि
चार्य बिना ही विचारैं॥ मृगेन्द्रं मृगेन्द्र जो सिंह ताकै किं॥ अ
भ्येति कहा नाहीं सन्मुख जाय है॥ यद्यपि मृग अति दी
न बलहीन है॥ तथापि जब सिंह ताके बालक कौं लिये जावै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्तामर॥
॥ ह॥

जैसो तैसे हैं॥ सो आसक्त [illegible] भये॥ से पे तुम्हारी भक्ति के
[illegible]वतें में स्तोत्र करिवे को चाल करी हों॥६॥ काव्य॥ त्वत्संस्त
वेन भवसंततिसन्निबद्धं पापं क्षणात्॥ क्षयमुपैति शरी
रभाजां॥ आक्रांतलोकमलिनीलमसेषमाशु॥ सूर्यांशु
भिन्नमिव शार्वरमंधिकारं॥७॥ अर्थ॥ हे [illegible]पारी
रनाजो पापं॥ हे नाथ शरीर के जो जन्मे से चलन चाले जो संसा
री जीव तिनकाजो पाप सो त्वत्संस्तवेन॥ त्वत्सं[illegible]है
रे स्तवेन तवन करि॥ [illegible] क्षयमुपैति॥ [illegible]
[illegible] एक काल में॥ क्षय नाम नाश को उपैति प्राप्त होय है॥ के सा है
पापं॥ भवसंततिसन्निबद्धं॥ भवपरंपरानि की संततिय
[illegible]विषै सन्निबद्धं॥ बांध्यो है नाथ तुम्हारी स्तुति करि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यतें परिहासधाम ॥ कहा है जो है विशेष ज्ञानी पंडित ॥ ति
नकौ परिहास कबे को धाम है मंदिर है ॥ ऐसा पमैं तो तुम्हा
रे स्तोत्र करिबे कौं असमर्थ ही हौं ॥ और जो मैं कछु करूं
सो तुम्हारी भक्ति के प्रभावतें ॥ म्हारा स्तोत्र करे हैं ॥ यत्को
किलः किल मधौ मधुरं विरौति ॥ यत्कोकिला है पैजाते कोकिल नि
श्चय करि ॥ मधौ वसंत ऋतु विषैं कोकिला मधुरं मिष्ट वच
नकौं विरौति बोलै है ॥ तच्चारु चाम्र कलिका निकरैक हेतुः
तत् कहिये तातें चारु मनोहर जो हैं ॥ आम्र कलिका आम
की कली का बौल तिनका निकर जो समूह है ॥ सो ही एक
हेतु कारण है ॥ जो सर्वं या को कोकिला कौ गुण होता तो
सर्व ऋतु मैं मिष्ट वचन बोलता ॥ तातैं वसंत ऋतु विषैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

॥८॥ अर्थ॥ हे नाथ इति मत्वा [illegible] इदं स्तवनं मया आरंभते
हे नाथ स्वामि इति यह मत्वा जांनि करि मैं प्रारंभो करि इदं यह तुं
॥ तव संस्तवनं तुम्हारो स्तोत्र॥ सो आरंभते आरंभ कि
यो है॥ कैसो जु मैं॥ तनुधियापि॥ तनु थोडी है धिया बुद्धि
जाकी ऐसो जु मैं॥ प्रभावितो भी मैं तुम्हारा स्तोत्र प्रार
जांन वारि करो हों॥ कहा जांन करि॥ तव प्रभावात् [illegible] चे
तः॥ हरिष्यति॥ तव कहिये तुम्हारो प्रभाव [illegible] सौं
सतां महां पुरुषन के॥ चेतः चित्त को हरिष्यति हरैगो॥ नलि
नि के मनहरण हारा अति सुंदर होइगो॥ प्राजु पर इष्टांत
कहि पै है॥ ननु उदबिंदु नलिनीदलेषु॥ मुक्ताफलद्यु
तिं उपैति॥ ननु इति वितर्के॥ उदबिंदु जो है जल की [illegible] बिंदु सो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऽअनेक पर्यायनि कृत पापकि सहूसंतानकी ख्रण ऽ कर्मै
हरी होय है॥ सुर्यांशु भिन्नं ऽ सूर्यपंऽ आसुरा वैरं ऽ भेद्या
रं॥ स्व स्वरूपकी जो है पंशु किरंण तिनकरि भिन्नं वदारि
कि या है॥ऽ अशेषं समस्तहीऽ आसुरी शुरी त्रा वैरं रात्री
संबंधीऽ अधार॥ स्व जैसैं कैसा है॥ऽ अंधकार॥ऽ आक्रांत लो
कं॥ व्याप्त कियां है लोक जांनैं वऊरि कैसा है ऽ अलिनील भ्र
[illegible] वत नील श्यामरे॥ भावार्थ॥ जैसैं सूर्यके उदय हो
तहां समस्तऽ अंधकार विलय जाय है॥ तैसें तुम्हारी स्तुति
सैं पाप नसैं॥ ७॥ काव्य॥ ॥मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मये
द मारभ्यते तनु धियापि तव प्रभावात चेतोहरिष्यति
सतां नलिनीदलेषु मुक्ताफलं द्युति मुपैति ननूद बिं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ति॥ त्वत्तितुम्हारी जो है संकथापि कथी वार्त्ता सो भी॥ जग
तां जगतजीवनके दुरितानि पापनको हंति करि है है
मै हूं॥ हे नाथ जे जीव तुम्हारी कथाकों करै है॥ ते नि
ष्पाप होय है॥ तहां स्तोत्रनको कहा कहनां॥ सो तो द
री है॥ यहां दृष्टांत करै है॥ सहस्रकिरणः॥ सहस्र
किरण जो है सूर्य सो तौ दूरि रहै है॥ परंतु॥ प्रभैव प
द्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि कुरुते॥ सूर्य
की जो है प्रभा सोही पद्माकरेषु सरोवरनि विषै ज
लजानि कमलनकों विकाशभांजि कुरुते॥ वि
काशकों नजै वासेवै॥ ऐसे प्रफुल्लित कुरु
ते करै है॥ भावार्थ॥ सूर्य दूरही है परंतु प्रभाकी॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नलिनी जो है कमलनी ताके दलपत्र विषें मुक्ताफल जो है
मोतीला की द्युति शोभा कौं आप्त होता है॥ जैसें कमलपत्र
विषें परी जलबिंदु वा पत्र के संगात तें मोती सा दिखाई
देय है॥ पर मोती नांही॥ तैसें यह स्तोत्र तुम्हारे प्रभाव तें
भव्यन के मन हरे है॥ ८॥ काव्य॥ आस्तां तव स्तवनमस्त
समस्तदोषं॥ त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति॥ दूरे स
हस्रकिरणः कुरुते प्रभैव॥ पद्माकरेषु जलजानि विका
शभांजि॥ ९॥ अर्थ॥ तव स्तवनं आस्तां॥ हे नाथ तव स्तव
नं तुम्हारा जो है स्तोत्र सो तौ आस्तां दूर ही है॥ कैसा है स्तो
त्र॥ अस्तसमस्तदोषं॥ अस्त दूर किये हैं॥ समस्त सर्व दो
ष पापादिक जानें॥ त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्तामर॥ तुम्हारी स्तुति करै है॥ ते तुम ही से होय है॥ अतिअद्भुत्
॥ ८ ॥ तं न यह आश्चर्य नांही॥ वा इहयः आश्रितं भू
त्या आत्मसमं न करोति॥ वा अथवा॥ इह इस लो
क विषें॥ यः जो धनवांन पुरुष॥ आश्रितं आधी
न पुरुष कौ॥ भूत्या लक्ष्मी करि॥ आत्मसमं॥ अपनी
बराबरि॥ न करोति नांही करै है॥ तेन किं॥ ता धनवंति क
रि॥ किं कहा है॥ कछु नांही॥ जो आधीन पुरुष कों अप
नी बराबरि न करि सकै॥ सो निंद्य न होय॥ परं जो निकरि
संसारी पुरिषि नी आधीन पुरुष कों अपनी बराबरि
करै है॥ तातैं हे नाथ तुम तो सर्व विधि करि समर्थ हो
जो न किकौं अपनी बराबर करो हो॥ ता कोई आश्च

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोषनिसेकर्मलकूलेहैं॥ तैसैंतुम्हारेंकीतौ दूरहीरहे
कथाही पापहरैहै॥ ९॥ काव्य॥ नात्यद्भुत
भुवनभूषण भूतनाथ॥ भूतैर्गुणैर्भुविभवंतमभि
ष्टुवंतः तुल्याभवंतिभवतोननुतेनकिंवा॥ भूत्या
श्रितंयइहनात्मसमंकरोति॥ १०॥ अर्थ॥ हेभुवन
भूषण हेत्रैलोकके आभरण हे॥ भूतनाथहेसमस्त
जीवनकेनाथ॥ भुवि भूतैर्गुणैः भवंतं अभिष्टुवंतः
भुविपृथ्वीविषै भूतैर्गुणै॥ उत्पन्नभयोहै गुणतिन
करिभवंतंतुमकोस्तवतेसंतेस्तुतिकरतभयेजीव॥
भवतु भवतः॥ तुल्याभवंति भवतु ॰महो भवतः॥ तुम्हा
रीतुल्यंभवंतिबराबरिहोयहोयहै॥ हेनाथ जेजीव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिंधोः पयः पीत्वा ॥ शशिकर जो है चंद्रमां ताकै सी द्युति
है भा है जाकी ॥ ऐसा जो है दुग्धसिंधु क्षीरसमुद्र ता
के पय पांनी को ॥ पीत्वा पीकर ॥ जलनिधेः क्षारं जलं अ
सितुं कः इछेत ॥ जलनिधि खारी समुद्र ताके क्षारं जलं
खारी जल को ॥ असितुं पीवे कौं कः कौन पुरुष ॥ इछेत
वांछै ॥ कोई नां वांछै ॥ भावार्थ ॥ जो क्षीरसमुद्र के पांनी
का पीवनवाला होय सो खारी समुद्र के जल विषैं कारे
को इछा मांनैं ॥ तैसें ही तुम्हारे दर्शन देख और देव विषैं आ
नंद नांही मांनैं है ॥ ११ ॥ काव्य ॥ यैः शांतरागरुचिभिः पर
माणुभिस्त्वं ॥ निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ ता
वंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां ॥ यत्तेसमान [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये नांही ॥ १० ॥ काव्य ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशि
करद्युति दुग्धसिंधोः ॥ क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छे
त् ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ जनस्य जनका ॥ न भवंत दृष्ट्वा अन्यत्र तो
षम् ॥ उपयाति ॥ हे नाथ जनस्य चक्षु मनुष्यका नेत्र ॥
भवंतं तुमको दृष्ट्वा देखिकरि अन्यत्र और विषैं ॥ तोषं
आनंदकौं न उपयाति ॥ नाही प्राप्ति होय है ॥ कैसे हो तुम
अनिमेष विलोकनीयं ॥ अनिमेष पलक के ढकवे तें र
हित विलोकनीयं देखवे कौं योग्य हो ॥ जिनजी व तुम
रा रूप सनरे तासे और देव विषैं रूप चि नाही मानै है ॥ मोए
हवा नायो अही हो दृष्टांत कहे है ॥ शशि कर द्युति दुग्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काहै तैं॥ एते समानमपरं न हि रूपमस्ति॥ यत जो कारणतैं
तेसमान तुमारी समान॥ अपर रूप नांही॥ जो तुमारी सं
रागरि और रूप होतो वा जो लिके परमाणु और भी कहै जा
ते॥ सो तो तुम समान रूप और कोई नाही देखिये है॥ तातै जो
जानके परमाणु तिन ने ही है॥ जितकरि तुम निर्मापित हो॥
१२॥ काव्य॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारी॥ निःशेषनिर्जि
तजगत्त्रितयोपमानं॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पं॥ १३॥ अर्थ॥ हे वक्त्रं कह
नागकं हां तुमारो मुख॥ क्व निशाकरस्य बिंबं॥ कहां चंद्रमा
कौ अति बिंब बडा हो अंतर है॥ जो को तुम्हारो मुख कौ समा
कौ उपमा देत है ते बडे मूर्ख है॥ क्योंकि तुम्हारे मुख कौ और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

प्रमति: १२ ॥अर्थ॥ त्रिभुवनैकललामभूत ॥ है तीन लोक
के एक तिलक ऐसे परमाणुभि: ॥ जिन परमाणुन करि ॥ त्वं
निर्मापित: तुम: निर्मापित हो ॥ खलु ते पि अणव: पृथि
व्यां तावंत एव खलु निश्चय करी ॥ ते पि अणव: ॥ ते प
रमाणु ॥ पृथिव्यां पृथ्वी विषैं ॥ तावंत एव तितने ही होय हैं ॥
कैसे हैं परमाणु ॥ शांतिरागरुचिभी ॥ शांति हरि भये हैं रा
ग जाके ॥ ऐसे जो वीतराग ॥ तिनि विषें रुचिभि: अभिला
षा जिनका ॥ ऐसा जो तिके परमाणु वीतराग शरीर विषे हो
य हैं और आर नांही होय हैं ॥ भावार्थ ॥ जिस जातिका धूर
समवेत वर्णरूप तुमारो शरीर के रचने वाले परमाणु हैं ॥ ता
जाति के [illegible] रसगंधवर्णरूप परम परमाणु तितने ही हैं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कःकलाकलाप॥ शुभ्रागुणास्त्रिभुवनंतवलंघयंतिये
संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं॥ कस्तान्निवारयतिसं
चरतोयथेष्टं॥१४॥ टीका॥ हेत्रिजगदीश्वर॥ हेतीनलो
कके नाथ॥ येतवगुणः त्रिभुवनंलंघयंतिये तं॥ तुम्हारे
गुणत्रिभुवनतीनलोककोलंघयंति॥ उलंघैहै॥ जे
सेवैहैजोतुम्हारेगुणहै॥ सोतीनलोकव्याप्तहै॥ कः ताप
यथेष्टं संचरतः निवारयति॥ कः कोनसोतिनगुणनकौं
यथेष्टस्वेच्छाचारसंचरंतः॥ फलैनै॥ निवारयतिनि
वारैहै॥ कोईननिवारै॥ जोतुमतैंकाहूविषैअधिकगुण
होय॥ तौतुम्हारेगुणजशकीबाधाहोय॥ भावयहै
हैसकलजगतमाहिकविशेषगुणवंतहोतोत्रैलोक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंद्रमां कोवडो अंतर है सो कहिये है ॥ कैसा है तुमारा मुख सु
रनरोरगनेत्रहारी ॥ सुर देवता नर मनुष्य उरग धरणेंद्रादिक
तिनिके नेत्रनकौं हरे है ॥ बहुरि कैसा है ॥ निःशेषनिर्जितजग
त्त्रितयोपमानं ॥ निःशेष समस्त ही निर्जित जीती है जगा
त्त्रितय उपमान ॥ तीन जगत विषें उपमा जानें ॥ तीन लोक
विषें असी कोई वस्तु नांही ॥ जाकी उपमां तुमारे मुख
बिंबकौं दीजे ॥ हे नाथ तुमारा तो मुख असा है ॥ और चंद्र
मांकौं प्रतिबिंब कैसा है ॥ कलंकमलिनं कलंक करि मैला
है ॥ यद्वासरे पांडुपलाशकल्पं ॥ सो तदा कहिये दिवस विषें
पीत होय है ॥ तातें असा चंद्रमांकौं प्रतिबिंब तुम्हारे मु
खकी उपमांकों क्यों दीजे ॥ १३ ॥ काव्य ॥ संपूर्णमंडलशशां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का मार्ग कौन आसि किंपा तो ॥ भावार्थ चित्त कौ ॥ पहां कहा आ
श्चर्य है ॥ कोई नांही ॥ जो देवांगनाओं के हाव भाव विभ्रमनि
करि तुम्हारा मन संसार न भयो तौ ॥ आश्चर्य नांही ॥ प
हांर ह्यांत कहि हे है ॥ कल्पांत काल मरुता ॥ प्रलय काल प
वन करि चल्या ऐसे ॥ किं मंदराद्रि सिखरं ॥ मंदराचल सुमेरु पर्वत
का सिखर चालित ऐ चल्यो है कदांचि नांही ॥ जैसें है पवन चलि
ता अचलेनं चलिन चले है ॥ अचल पर्वत जाके ॥ जो प्रल
य काल का पवन अचलनि है ॥ ही न पर्वत कौ उडावै है ॥ तौ
कहा सुमेरु सिखर कौं चलाय सकै है ॥ तैसें देवांगनां अंगि
री मनोज्ञ उसेन जानी है ॥ हरिहरादि देवन कौं [illegible] की के
है तो कहा तुम्हारि मन राग भी कैं सी ॥ कदाच नांही ॥ [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नै है॥ जो तुमारे जश्याकौं निवारै॥ जैसे है तुम्हारे गुण॥ संपूर्ण
मंडलशशांककलाकलापशुभ्रा॥ संपूर्णमंडल जाकौ
ऐसा शशांक जो चंद्रमा ताकी कलान का कलाप समू
ह तैसें तुम्हारे गुण उज्वल है॥ पूर्णमासी के चंद्रमा कैसी कलातै
सें उज्वल है॥ बहुरि कैसे है॥ एक नाथ संश्रिता॥ एक नाथ
के आश्रित है आधीन है॥ एक तुम ही नाथ विषै है॥ १४
काव्य॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि॥ नीतं मनाग
पि मनो न विकारमार्गं॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन
किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्॥ १५॥ अर्थ॥ यदि तेम
नः हे भगवन् यदि जो॥ ते मनः तुमारा मन॥ त्रिदशांगनाभिः देवां
गनाभिः मनाक् अपि॥ कवहूं नो विकारमार्गं न नीतं॥ वि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेहो तुम जगत प्रकाश: ॥ सब लोक विषै है ऐसो सजाको ॥ भा
वार्थ ॥ हे नाथ यह दीप धूमकर कलितं कैत और पराधीन है वा
तौ [illegible] वलै है ॥ और तुम निः कलंक स्वाधीन वातैं करि दीप
मांन हो ॥ और यह दीप तेलकरि भरयो है ॥ तवलौं हो है ॥ तुम
सांनि: स्नेह वीतराग हो ॥ और यह दीप पट के घरकौं प्रगट करै
है ॥ और तुम तीन लोक प्रगट करो हो ॥ और दीप पवनकरि मं
दहो यहै ॥ और तुम सदा ज्ञान रूप [illegible] पा रिकीं ॥ अमंद हो
हे नाथ यातैं तुम अपूर्व दीप हो ॥ १६ ॥ काव्य ॥ नास्तं कदा
चिदुपयासि न राहुगम्यः स्पष्टी करोषि सहसा युगपज्जगं
ति ॥ नाम्भोधरोदर निरुद्धमहाप्रभावः सूर्यातिशायि महिमा
सि मुनींद्र लोके ॥ अर्थ ॥ हे मुनींद्र हे मुनिनाथ तो कोसूर्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रागसुमेरसिखरवतहो॥२५॥ काव्य॥ निर्हूमवर्तिरपवर्जित
तैलपूरः॥ कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रगटीकरोषि॥ गम्यो न ज
तुमरुतां चलिताचलानां॥ दीपोपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्र
काशः॥ अर्थ॥ हे नाथ त्वं अपूर्वदीपक हो वजरि कैसे हो
निर्हूमवर्ति॥ दूरि भई है॥ धूम अरु बाती जातें॥ बहुरि कैसे॥
हो॥ अपवर्जित तैलपूरः॥ अभाव वर्जित कहूल है तेलको पूर
जातें॥ इं ऊं कृत्स्नं जगत्त्रि पं प्र करी कोषि॥ इदं पंहू जौहै
कृत्स्नं समस्त जगत्त्रियं तीन लोक प्रति तिनै उदयोक
रोषि: प्रगट करो हो॥ बहुरि कैसे हो॥ जातु मरुतां गम्य न॥
जाते कौ पवन भी मरुतां पवन की गम्य नाही॥ कैसा है पवन
चलिताचलानां॥ चलाये हैं॥ अचल पर्वत जिननें॥ बहुरि कै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम्हारी महिमा सूर्य तें अधिक है ॥ जैसे सूर्य वत् तुम कौं क
है है ॥ तेव डे सूर्य हौ ॥ २४ ॥ काव्य ॥ नित्योदयं दलितमोह
महांधकारं ॥ गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ॥ विभ्राजते
तव मुखाब्जमनल्पकांति ॥ विद्योतयज्जगदपूर्वशशां
कबिंबं ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ तव मुखाब्जं अपूर्व शशांक बिंबं
विभ्राजते ॥ हे नाथ तव मुखाब्ज तुमारा मुखकमल ॥ अपू
र्व अनूपम शशांक बिंब ॥ चंद्रमा के सो अति बिंब ॥ विभ्राज
ते सोभायमान है ॥ पुनः चंद्रमा बिंब वत् नाही ॥ बहुरि कैसा
है तुम्हारा मुख ॥ नित्योदयं ॥ सदा काल उदय रूप जाका ॥
अरु या चंद्रमा का उदय एक बखत नाही ॥ बहुरि कैसा है तु
मारा मुख ॥ दलित मोह महांधकारं ॥ हरि लिया है मोह रूप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिशायि महिमासि। या लोक विषैं तुम्हारी सूर्य तें अतिसय
अधिक महिमा है। ऐसे तुम हो। नास्तं कदाचिनु अस्तं न उप
यासि। तुम कदाचि अस्ति नहीं हो। अरु सूर्य नितिहि पैं है। न
राहुगम्यः। तुम विषैं राहु की गम्य नाही। सूर्य तें राहु तें हो
संतापवंत हो। अरु यह सूर्य राहु ग्रानुं करि ग्रस्यो है। तुम सह
सा शीघ्र ही युगपत् एक ही बार। जगंति तीन लोक नें को स्प
ष्टी करोषि प्रगट करो हो। अरु सूर्य क्रम सें एक क्षेत्र कौं प्रगट
करें है। नं अंभोधरोदर निरुद्ध महाप्रभावं तुम अंभोधर
जो है मेघ ता के उदर मध्य आगम करि निरुद्धो का महाप्रभा
व प्रताप जा को ऐसें नाही। जा एक निनाकांति करि मेघ पटल नैं क
रि निराकरण हो। अरु सूर्य मेघ करि हित प्रभा है। तातें हे नाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्ता ॥ १६ ॥

करे है ॥ भरतु मारा मुख अनूप अपूर्व चंद्र अति बिंब
बत है ॥ १८ ॥ काव्य ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्व
ता वा ॥ युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्न
शालिवनशालिनि जीवलोके कार्यं कियज्जलधरैर्ज
लभारनम्रैः ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ हे प्रभु युष्मन्मुखेंदुदलितेषु
तमस्सु ॥ हे स्वामी तुमारा जो मुख सोइ चंद्रमा ताकरि
दलितेषु हरे जिनता रा संते अंधकार नकौ ॥ शर्वरीषु
रात्रिनाके ॥ रात्रिन विषै चंद्रमा करि कहा प्रयोजन
है ॥ वा अह्नि विवस्वता किं ॥ अथवा दिन विषै सूर्य करि
कहा कारज है ॥ हे नाथ जब तुमारे मुख चंद्र करि नष्ट हो
रि अंधकार होत संते रात्रि दिन विषै चंद्रमा सु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महा अंधकार जानें ॥ तुमारा मुख या अंधकार कौ भी दूर करै
है ॥ अरु मोहांधकार का भी नाश करै है ॥ बहुरि कैसा है तुमारा
मुख ॥ राहुवदनस्य गम्यं न ॥ हे नाथ तुमारा मुख राहु की गम्य
नांही ॥ तुम सर्पास्तु तें रहित हौ ॥ अर यह चंद्रमा राहु करि ग्र
सीत है ॥ वारिदानां गम्यं न ॥ तुमारा मुख मेघ की गम्य नांही
अर कोऊ आवरण करि सीतलता पनां हीं ॥ अरु पर चंद्र
बिंब मेघ करि आछतो जाय है ॥ बहुरि कैसा है तुमारा मुख
अनल्पकांतिलीना ही है थोडी कांति विजाकी ॥ अरु या चंद्र
मां की कलंकितता थोडी छवि है ॥ बहुरि कैसा है तुमारा मु
ख ॥ जगत विद्योतयत सब जगत कौ उद्योत करै है ॥ हे नाथ ऐसा
ही कारणतें यह चंद्र ऐक क्षेत्र विषै भी किंचित उद्योत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्ताम॥
॥१२॥

मां ति॥ हे नाथ यथा जैसैं त्वयि तुम विषैं ज्ञान विभाति
शोभायमान है॥ कैसा है तुम्हारे विषैं ज्ञान॥ कृतावका
शं॥ किया है लोकालोक विषैं प्रकाश जानैं॥ एवं तथा
हरिहरादिषु नायकेषु॥ एवं प्रकार करि तथा जैसैं
हरिहरादिक नायक जो हैं॥ नारायण महादेव ब्रह्मा
दिक तिन विषैं नांही॥ यथा दृष्टांत यथा महामणि
षु तेजः॥ महत्त्व याति॥ जैसैं महामणि रत्न विषैं तेज
प्रकाश॥ महत्व उत्कृष्टता कौ याति प्राप्ति होय है॥
एवं तु किरणाकुले पि काचशकले न॥ या प्रकार
करि ते प्रकाश किरणा करि युक्त भी है॥ यद्यपि काच
कोपाक कलै जो खंड ता विषैं नाहिं॥ जो काचखंड अति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ई का कछु काम नांही ॥ यथा दृष्टांत कहिये है ॥ निष्पन्न
शालिवनशालिनि जीवलोके सति ॥ निष्पन्न कहतां नि
पजै है ॥ शालि जो नाज ॥ वनशालि वन धान्य ॥ आदि देइ ऐसे
या जीव लोके प्रथवी लोक के हुए संते ॥ जल भार नम्रै जे
लधरै कार्यं कियत ॥ कितना एक है कछु नांही ॥ जो भूमि
विषें निपजी नांही मेघ सबना जउपजे ॥ तौ मेघ का का हा कार
नां है ॥ तैसें तुम्हारे मुखकी दीप्तितै अंधकार ती बं ईस
ई का अभिप्रकार नांही ॥ १९ ॥ काव्य ॥ ज्ञानं यथा त्वयि
विभाति कृतावकाशं ॥ नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु
तेजो महामणिषु याति यथा महत्त्वं ॥ नैवं तु काचशक
ले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ अर्थ ॥ यथा त्वयि ज्ञानं विभा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भक्तामर ॥
॥ २२ ॥

...षको प्राप्त होय है ॥ भगवानि दासु तिकरि कहै है ॥ नाथ प
नन ... क्षितेन किं ॥ हे नाथ तुमारे देखवे करि कहा नाहीं ॥
कार्हेतं तुवि येन नान्यः कश्चित ॥ याका धी विषे जिसका
रणतैं और कोई देवता न जानतेवामि ॥ और परमेश्वर विषे भी
मनोहारिता मन को न हीं हरे है ॥ उनके है विवेक रि ... ला
नरूपा ॥ जो तुम्हारे विषें दृष्टता नाईं ॥ तुम्हारे देखतैं और ला
न के कछु नाहीं ॥ जो अनमो को देव ... मन को न हरे ॥ जो ले तुमतें
... कोई वड़ा नाहीं ॥ तातें इनही को दर्पनो ... ॥ २१ ॥ काव्य
स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान् नान्या सुतं त्वदुपमं
जननी प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं प्राच्येव
दि[illegible]ग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥ टीका ॥ स्त्रीणां शतानि

CC0-In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

री तेज होयगा॥ तो कहां महारत्ननकी जोति कांचखंडके
रैगा॥ तैसैं हे नाथ तुम विषैं ज्ञान है॥ तैसैं हरिहरादिक वि
षैं कहां तैं होय॥ तुम सत्य महारत्नवत अरु वै काचकौ
खंड सम है॥ २०॥ काव्य॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति॥ किं वीक्षितेन भव
ता भुवि येन नान्यः॥ कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांत
रेपि॥ २१॥ अर्थ॥ हरिहरादिक एव दृष्टा है अरु हरिह
रादिक जो हैं देखता तैं देखे हुए॥ अरु वरं मन्ये॥ मनमैं
मानौं हौं॥ जातैं तुम्हारे गुण विषैं दृष्टेषु॥ अरु ये
षु देखे॥ हृदयं त्वयि तोषमेति॥ येषु देखेहु जिनके
देखे संतें॥ हृदय जो है सो त्वयि तुम विषैं॥ तोषमेति सं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्तामर॥ ॥२६॥

मांस॥ मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात्॥ त्वामेव सम्यग
पलभ्य जयंति मृत्युं॥ नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः
२३॥ टीका॥ मुनयः त्वां परमं पुमांसमामनंति॥ हे नाथ मुनी
श्वर तुमकौं परम पुरुष कहै हैं॥ कैसे हो तुम आदित्यवर्णम्
र्य वत् देदीप्यमान है अर तमको नाश करिके सही॥ अमलं
निर्मल हो॥ कहा है तौं॥ तमसः पुरस्तात्॥ अंधकार के हरिबे
वारे तैं॥ च पुनः एव सम्यक् उपलभ्य मृत्युं जयंति॥ तुमही कौं नीकी भांति प्रा
प्ति होय करि॥ मृत्यु जयंति मुनिश्वर मृत्यु कौं जीते हैं हे मुनी
द्र अन्य शिवपदस्य शिवः पंथा न॥ हे नाथ सिवाय तुम्हारे मोक्ष
स्थान का कोई भी मार्ग नाहीं है॥ तुमही हो॥ २३॥ काव्य॥ त्वामव्य
यं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं॥ ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगके
तुं॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं॥ ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंत्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीनके जो है सैकडा ॥ तेसततसो पुत्रनि जनै ह्ति ॥ तैसे कडो
पुत्रजनती है ॥ अन्य जननी तुम सीनांन विषैं ओर कोई मा
ता ॥ त्वदुपमंसुतं ॥ तुमारी बराबरि पुत्रकौं न अस्त मातृ न जन
ती भई ॥ स्त्री तो पुत्र अनेक जनै है ॥ पर जैसे तुम्हारी जणनि
हारी माता है ॥ ऐसी और कोई नांही है तातें कहे है ॥ सर्वा दि
शो नो निदधिति ॥ सब ही दिशा नक्षत्र तारागणकौं धरै है ॥
प्राची एव दिक सहस्र रश्मि जनयति प्राची जो है पूर्व दि
शा सो ही सहस्ररश्मि सूर्य ताकौं उपजावै है ॥ कैसा है सूर्य ॥ स्फु
रद् अंशुजालं ॥ स्फुरायमान है दीप्यमान है ॥ प्रफुल्लित किरणनिकौ
जाल जाकै ऐसा सूर्य ताहि विषै ॥ जैसे और दिसा तारागणकौं उ
पजावै है सूर्य केउदै करि वे सो पूर्व ही दिसा है ॥ और दिसा
असमर्थ है ॥ २२ ॥ काव्य ॥ त्वामामनंति मुनयः परमंपु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्ताम ॥ अनेक ॥ गुण पर्याय करि अनेक रूप हो ॥ एवमस्तु स्तुति करि ए क
॥२०॥ हो ॥ ज्योति स्वरूप हो ॥ ज्ञानरूप ज्ञान गम्य हो ॥ अमल निर्मल हो ॥
२४ ॥ काव्य ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित बुद्धिबोधात् ॥ त्वं शं
करोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् धातासि धीर शिवमार्गविधे
र्विधानात् ॥ व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ अर्थ

विबुधार्चित विबुधा जो हैं ॥ देवता तिनकरि अर्चित पूजित हो ॥ हे नाथ
बुद्धस्त्वमेव ॥ बौधमती कहै कि बुद्ध देवता तुम ही हो ॥ काहे तें बु
द्धि के बोध का शतें जे सर्व त्रिकाल गत समस्त द्रव्य गुण पर्याय का
ज्ञान ताका विषैं हैं ॥ तैसा और कोई नाहीं ॥ ता तें पुनः त्वं शंक
रोऽसि ॥ हे नाथ और तुम शंकर महादेव हो ॥ कोई एक शिवमती
कहै है ॥ कि महादेव शंकर है ॥ सो नाहीं तुम ही हो ॥ काहे तें ॥ भुव
नत्रय शंकरत्वात ॥ भुवनत्रय ॥ तीन लोक तामैं ॥ शं नाम सुख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वंदे लिसंतः ॥ टीका ॥ संतः त्वौ ? तारहंसं प्रवृत्ति ॥ महा पुरुष
तुमहि एसा कहे हैं ॥ कैसे हो तुम ॥ ऽ आचार्य ॥ जिनां शतें भई है तिन ही
वज्री कैसे हो ॥ विंतु परमे ज्ञ यं हैं ॥ वज्री कैसे हो ॥ ऽ अचिंत्य
मनगो चरनी हीहो ॥ वज्रि कैसे हो ॥ ऽ मांस मुनी रही है गुण
पांत्या जाकी ॥ वज्री कैसे हो ॥ ऽ आचं तु पकाल कौ ऽ भी
रिंहीं उपजे हो ॥ वज्री कैसे हो ॥ अलाप ॥ अस्ता हो ॥ वज्री कै
से हो ॥ ई ज्जं ॥ महादेव हो ॥ वज्री कैसे हो ॥ ऽ अनंत ॥ गुणनकै
रि ऽ अतलैर हित हो ॥ वज्री कैसे हो ॥ ऽ अनंगकेतु ॥ ऽ अंगना जो है
कांमता को नेतु ताए नतु हो ॥ जैसे केतु के उदय तें जगतें ना प्रा
होय है ॥ तैसें कांम केना श्र को तुम केतु वा रैसो ॥ वज्री कैसे हो ॥
योगी अर्थ ॥ चतुर ज्ञानी मुनि के ईश्वर हो ॥ विदित योग जानें
है ॥ सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र रूप योग जानें ॥ वज्री कैसे हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

याते वे सरागहै ॥ अरु तुम वीतरागहो ॥ २५ ॥ काव्य ॥ तुभ्यंनमः
स्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ ॥ तुभ्यंनमः क्षितितलामलभूषणा
य ॥ तुभ्यंनमः ॥ त्रिजगतीपरमेश्वराय ॥ तुभ्यंनमो जिन भवोदधि
शोषणाय ॥ २६ ॥ टीका ॥ तुभ्यंनमः हे नाथ तुमको नमस्कार
होउ कैसे हो तुम ॥ त्रिभुवनार्तिहराय ॥ त्रिभुवनकहिये त्रिलो
ककोजोहै आर्तिपीडाताके हरणहारे हो ॥ बहुरि कैसे हो तुम
क्षितितलामलभूषणा ॥ य ॥ क्षितितलाजोहै प्रथ्वीतलता
के अमल निर्मल भूषणहो ॥ अरु इह प्रथ्वी तुमकरि मंडित
है ॥ पुनः तुभ्यंनमः ॥ बहुरि तुमको नमस्कार होउ ॥ पुनः कैसे
हो तुम ॥ त्रिजगतीपरमेश्वराय ॥ तीनजगतके परमेश्वर ठा
कुर होउ ॥ पुनः कैसे हो तुम ॥ भवोदधिशोषणाय ॥ भवोदधि जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐक आंण ताके कारणतें ॥ जैसा तुम त्रिलोक को सुखदायक
हो सुधर्म उपदेश दे हो ॥ तैसा और कोई नां है ॥ तातें हे धीर धी
तासि ॥ हे धीर निज स्वरूप करि अचल धाता सि ॥ धाता धारन
करने वाले तुम ही हो ॥ कोई क यों कहे हैं ॥ कि ब्रह्मा धाता है स्रष्टि
के धारण पोषण तें ॥ सो यह नांही ॥ तुम ही हो ॥ सिवमार्ग वि धे
विधानात् ॥ सिवमार्ग जो है मोक्षमार्ग सम्यकदर्शन ज्ञान चा
रित्र रूप ताकी विधि के विधान करनतें ॥ जैसें मोक्षमार्ग तुम करो
हो ॥ और करावो हो ॥ तो सो और कोई नांही ॥ तातें हे भगवान
वक्रं त्वमेव पुरुषोतमः असि ॥ हे नाथ कई एक जीव कहे है ॥
कि नारायण पुरुषोतम है ॥ सो नांही ॥ वक्रं अगट ॥ त्वमेव तुम ही
पुरुषोतमो सि ॥ पुरुषोतम हो ॥ पुरुषन के विषैं उत्तम हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो देखो हो के से हैं दोष ॥ उपात विविध आश्रय जात गर्वैः ॥ उपा
त अंगीकार किया है ॥ विविध हरि हरादिक देवता तिनका ॥
आश्रयता करि ॥ जात उत्पन्न भया है ॥ गर्व जिनकों ऐसा ॥
यं जब तुमकों दोषकूं ने गुण ही करि शरण अवकाश रहि
त देख ॥ तब दोषन यह विचारी कि ॥ इस वीतराग विषें हम
कों जगह नांही ॥ तो कहा फिकर हमकों ॥ हरि हरादि देवता
तिन विषें बहुतेरी जगै है है ॥ यह विचार गर्व करि के ते दो
ष तुम वीतराग तैं ऐसें गये जो तुम कों स्वप्नांतर विषें
भी याद नां किया ॥ हरि हरादि देवतान विषें स्थान पाव
री होय करि रहने लगे ॥ यह भावार्थ जांणनां ॥ २७ ॥ छ
काव्य ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख ॥ माभाति रूप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे सो ऐसे समुद्रता के सोषन हारे हो ॥ संसार कौं हरकरो हो ॥ २६ ॥
काव्य ॥ को विस्मयोत्र यदि नाम गुणैरशेषै ॥ स्त्वं संश्रितो नि
रवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः स्वप्नांत
रेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ हे मुनीश यदि
त्वं अशेषैः गुणैः संश्रित असि ॥ हे मुनिनि के ईश स्वामी यदि
जो त्वं ॥ तुम अशेषै गुणै ॥ समस्त ही गुणन करि ॥ संश्रित आ
श्रित युक्त असि हो ॥ तुम के से गुणन करि के युक्त हो ॥ निर
वकाशता करि कै ऐसे तुम विषै गुण आश्रय है ॥ जो तुम्हा
रे विषै कौं जगा रहनी नाही ॥ तदा अत्र विस्मयः कः तो इहां कौन
आश्चर्य है कोई नाही ॥ तुम गुणवंत हो ॥ दोषैः स्वप्नांतरे
पि ॥ स्वप्न विषै भी ॥ कदाचित कबहूं ॥ न ईक्षित न असि ॥ ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमो वितानं ॥ अस्त हरि कियाहै ॥ तम अंधकार को वितान समूह जानें ॥ २८ ॥ काव्य ॥ सिंहासने मणिमयुषशिखा विचित्रे ॥ विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलता वितानं ॥ तुंगोदयाद्रिसिरसीव सहस्ररश्मे ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ तव वपुः सिंहासने विभ्राजते ॥ हे नाथ तुम्हारा विपु जो है शरीर सो [illegible] सिंहासन विषैं ॥ विभ्राजते शोभायमान है ॥ कैसा है तुम्हारा शरीर ॥ कनककावदातं ॥ कनक जो सोना ता [illegible] त रूप अवदात न उज्जल है ॥ कैसा है सिंहासन ॥ मणिमयूषशिखा विचित्रे [illegible] मणि जो है रत्न तिनकी मयूष जो है किरण ॥ तिनकी जो है शिखना करि विचित्र कहिये नाना प्रकार है ॥ अनेक वर्ण के रत्न दीप्त करि कै शोभायमान [illegible] वर्ण युक्त है ॥ तिन विषैं

हे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ममउंनवतोनितांतं ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोविता
नं ॥ बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ अर्थ ॥ हेनाथ भ
वत: अमलं रूपं ॥ तुमारा निर्मलरूप ॥ नितांतं ॥ अति
अति अधिक सोभायमान है ॥ वकुरि कैसा है तुमारा रूप
उच्चैर सोकतरु संश्रितं ॥ उच्चै ॥ ऊंचा है अशोकवृक्ष
तिसके पाश संश्रितं तिष्ठै है ॥ वकुरि कैसा है ॥ उन्मयुषं
अति ऊंचा है मयुख किरण जा विषै ॥ किरणनिक
रि दैदीप्यमान है ॥ तुम्हारा रूप किसकी नाई ॥ अशो
कवृक्ष समक्षो नाईसोंने है पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ रवे
बिंबं ॥ सूर्यका प्रतिबिंब है ॥ कैसा है सूर्यका प्र
तिबिंब ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणं ॥ स्पष्ट ॥ नारी उल्लसत्
दैदीप्यमान किरणि है जाकी ॥ वकुरि कैसा है अस्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥भक्तामर॥ ॥२४॥

श्रांकशृंग चिनिर्झरवारिधार॥ मुचैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौ
म्भं॥३०॥ अर्थ॥ हे नाथ तव वपुः विभ्राजते॥ तुम्हारा वपुः
जो है शरीर सो विभ्राजते विशोभमानै है॥ कैसा है तुम्हारा
शरीर॥ कुंदावदात चलचामर चारु शोभं॥ कुंद के जो है
फूल ते सा॥ अवदात उज्वल है॥ चमर चल कहिये चंचल
ऐसे जो हैं॥ चमर तिनकरि चारु भली है सोभा जाकी॥
बहुरि कैसा है तुम्हारा शरीर कलधौत कांतं॥ कलधौत
जो है॥ सो नाम द्रुत कांत सुंदर है॥ तुम्हारा शरीर किस
की नांई शोभै है॥ सुरगिर उच्चै शांतकौं नेलटं इव सुर
गिर जो है सुमेरु पर्वत॥ तिसका उच्चै ऊंचा शांतको
नं कहिए सुवर्णमई तटल्व जांको॥ कैसा है सुमेर परव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सा शोभायमान है तुम्हारा शरीर ॥ तुंगोदयाद्रि शिरसी
व सहस्ररश्मेः बिंबइव तुम ऊंचा जो है उदयाद्रि उदयाचल
पर्वत ॥ ताके शिरसि मस्तक विषैं ॥ सहस्ररश्मि सूर्य का बिं
ब ॥ इव जानों जैसा प्रातःकाल उदयाचल पर्वत उपरि उद
होतैं सूर्य दैदीप्यमान शोभै है ॥ तैसा सिंहासन ऊपर तुम्हा
रा शरीर सोभायमान है ॥ सूर्य के सा है ॥ वियद्विलसदं
शुलता वितानं ॥ वियत जो है आकाश ता विषैं लसंतैं दैदी
प्यमान जो है अंशु किरण तेई हुई बेलि तिनका वितान वि
स्तार जिस विषै ऐसा जो सूर्य जाकी आकाश विषैं कि
रण रूप बेल फैल रही है ॥ २० ॥ काव्य ॥ कुंदावदातचलचा
मर चारु शोभं ॥ विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांत ॥ उद्यच्छ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रिकै से है ॥ छत्रत्रयं स्थगितभानुकरः प्रतापं ॥ स्थगित
भ्या छादित किया है ॥ भानु सूर्य ताकी कर ॥ किरण निका
समूह जानें ॥ ऐसें रिकै सा है प्रताप ॥ मुक्ताफलप्रकरजा
लविवृद्धशोभं ॥ मुक्ताफल जो है मोती तिनका जो है जा
ल समूह झालरि तिन करि वृद्धि वधी है ॥ शोभा जानें
ता विषें ॥ ऐसें रिकै सा है छत्रत्रय ॥ त्रिजगतः परमेश्वरत्व
प्रख्यापयत् ॥ त्रिजगतः तीन जगत का जो है ॥ परमेश्वरत्व
ठकुराई ॥ ताहि प्रख्यापयति कहे हैं ॥ तीन छत्र तीन लोक की
ईश्वर ताके सूचक करें हैं ॥ हम लागांने के ऊपर तीन छत्र स्वा
मी कहे है ॥ जो भगवान् तीन लोक के नाथ हैं ॥ और कोई ना
हीं ऐसो कहे है ॥३१॥ काव्य ॥ गंभीरताररवपूरितदिग्विभाग

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तकातटं॥ उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधारं॥ उद्यन उद
य हूवा है सा शशांक चंद्रमा॥ तैसा शुचि उज्जल निर्झरना ति
सका वारि जल धारा है जा विषे॥ जैसा ऊंचा सुमेरु परबत का
तट शिखर नै कर शोभै है॥ तैसा तुम्हारा शरीर चमरन करि
शोभायमान है॥३०॥ काव्य॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशांक
कांत॥ मुच्चैस्थितं स्थगितभानुकरप्रतापं॥ मुक्ताफलप्रक
रजालविवृद्धशोभं॥ प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं॥३१
अर्थ॥ हे नाथ तव छत्रत्रयं विभाति॥ हे नाथ तुम्हारे जो छ
त्रत्रय तीन छत्र॥ विभाति कहिए शोभै है॥ कैसा है तुम्हारा छ
त्रत्रय॥ शशांक कांतं॥ शशांक जो है चंद्रमा तैसा कांत सुंदर
है॥ बहुरि कैसा है उच्चैस्थितं॥ ऊ तिष्ठे है तुम्हारे ऊपर है बहु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नकोमस॥
॥२६॥

है॥ तू तिपो मात्मा तिर्थंकरी ए है॥ ऐसे सेद्राच्छ दो पयो॥ जि
नकौ मुनि करि जै ओ कय के मनुष्य॥ स्वर्ग देव पाताल के लोक
के देव समस्त ही समोसरण विर्षे मिले है॥ पुनरि कैसा है
सद्धर्म राज जय घोषण धोषक॥ सद्धर्म समीचीन जो है
धर्म तिसका जो राजा अनुश्री वर्धमान तिसका जो जय
घोष जय शब्द तिस करन हारे हैं घोडूं द्रुमि:॥ सर्व जनानि
नुको जय जय कार करै है॥ पुनरि कैसा है॥ सर्व [illegible] नी
नरे मनः ऋरू कर्ता को है है॥ यद्यपि नग जीवन के समीप
रण विर्षे साढे बार हकोडि बाजित्र बाजै है॥ तथापि विर
स्पर बातें करते बाधा नाही होय है॥ ऐसा सुहावे नाही लागे
है॥ २४॥ ऐसर्व॥ मंदार सुंदर नमेरु पारजात॥ संतानका

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रैलोक्यलोकसुजनसंगमभूरिदक्षः ॥ सद्धर्मराजजयघो
षणघोषकः ॥ सन्‌ खेदुंदभिःर्ध्वनतिते यशसः प्रवादी
३२ ॥ टीका ॥ हे देव ते दुंदभि खे ध्वनंति ॥ हे नाथ ते तुम्हारे
दुंदभि: दुंदभि: सत्‌ खे आकाश विषैं ध्वनंति वाजै है
कैसा है दुंदभि: शब्द ते यश: प्रवादी ॥ तुम्हारा जो है यश
ताहि प्रवादी ॥ अर्थात्‌ प्रकर्षकरिकै कहै है बहुरि कैसा
है ॥ गंभीरताररवपूरितदिग्विभाग ॥ गंभीर बहुत धीरयु
क्त तार ऊंचा ऐसा जो रवि शब्द ताकरि पूरित कहिये भर्‌ण
किये हैं ॥ दिग्‌ विभाग दिशाके विभाग जानें ॥ बहुरि कै
सा है दुंदभि शब्द: त्रैलोक्य सुजन संगम भूरिदक्ष: ॥ त्रैलो
क्य कै लोकन का जो सुजन संगम सुजन मिलाप तिसकौं जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नक्ताम।
॥२१॥

द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपंती। प्रोद्यदिवाकरनिरंतरभूरिसं
ख्या। दीप्त्याजयत्यपिनिशामपिसोमसौम्या॥३४॥ अर्थ
हे विभोः ते शुंभत्प्रभावलय भूरिविभा। हे विभो हे प्रभु तु
म्हारे जो है प्रभावलय नाम मंडल तिसकी जो है भूरिविभू
ति विभा कांति सो दीप्त्यानिशां अपि जयति। दीप्ति प्रकाश
कारि रात्रि कौ भी जयति जीते है। हे नाथ तुम्हारे शरीर की दी
प्ति अैसी है। जहां तुम हो फेर तहां रात्रि न होइ। कैसी है तुम्हा
री दीप्ति। लोकत्रय द्युतिमतां द्युति आक्षिपंती। तीन लो
क विषैं द्युतिमतां जो। कोई वस्तु दीप्तवंत प्रकाश है। तिन
कौ द्युतिमतां प्रकाशवंतां। आक्षिपंती। छिपावे है। नग
नान के प्रकाश के और आगे सर्व प्रकाश हरि रहे पड़े है। च

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा॥ गंधोदविंदुसुभमंदमरुत्प्रपाता
दिव्यादिवःपततितेवयसांततिर्वा॥ ३३॥ टीका॥ हे देवते
तुम्हारे मंदारसुंदरनमेरुसुपारिजातसंतानका॥ इत्या
दिकजोहैकल्पवृक्षतिनकेसुमोत्करकहिएफूलनका
समूहतिसकीवृष्टिदिवःपतति॥ दिवजोहैआकाशता
सौंपरेहै॥ गंधोदबिंदुजलकीबूंदतिनकरि॥ शुभसीतल
नेलो [illegible] मंदहलनकाजोमरुत्प्र पातपवनकाचलनो
तिसकरदिव्यमनोज्ञजोहैसुहावनीहै॥ वहपुष्पवृष्टीकैसी
है वयसांततिर्वा॥ वयसजोहैपक्षीतिनकीवयसांजोत
तिपंक्तिहैजांनो॥ आकाशतैंजानो॥ पंखीउतरेहै॥ ३३॥
अर्थ॥ शुंभत्प्रभावलयभूरिविभाविभोस्ते॥ लोकत्रय

तौ एक अयोजन पर्यंत सौं है॥ कैसी है तुम्हारी दिव्यध्वनि
त्रैलोक्या तीन कुलोक के जीवन सधर्म जो कहिये भला धर्म
तिसका जो तत्व स्वरूप तिसके कथन कहन विषै एक पटु मु
ख्य प्रवीण है॥ साम्हसौं ही जीवन के धर्म के स्वरूप कों बतावै
है॥ वहुरि कैसी है॥ स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः॥ स्वर्ग
अरु अपवर्ग जो मोक्ष तिनका जो गम मार्ग चलने का मा
र्ग अवहारनि अवधारन तनु प्रति तिसका जो मार्ग ता देखवानि
ते के तांई इष्ट है प्रिय है॥ स्वर्ग अरु मोक्ष मार्ग के दिखावै
कों समर्थ है॥ वहुरि कैसी है दिव्यध्वनि॥ विशदार्थसर्व
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः॥ विशद जो है प्रगट
अर्थ जिन विषै॥ जो परिणाम गुण ता परणति गुण है॥ ऐसी जो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कारि कैसी है दीप्ति ॥ प्रोद्यद्दिवाकर निरंतर भूरिसंख्यां ॥ प्रोद्यत
है दीप्यमान जो है दिवाकर सूर्य तिसकी निरंतर भूरि बहुत
संख्या सो है जा विषैं ॥ ऐसी दीप्ति जानो कि कोटि सूर्य उदै है
बहुरि कैसी है दीप्ति ॥ सोमसौम्यां सोम जो है चंद्रमा तिसी सौम्या
शांति है ॥ हे नाथ सूर्य की जोति पतासो आताप उपजावै है ॥
तुमारी देह द्युति प्रकाश करि तो कोटि सूर्य समान तुल्य है ॥
अरु सांतता करि चंद्रमा वत् है ॥ आताप करता नाहीं ॥ ३४ ॥ काव्य
स्वर्गापवर्गगममार्ग विमार्गणेष्टः ॥ सद्धर्मतत्त्वकथनैक
पटुस्त्रिलोक्याः ॥ दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व ॥ भाषा
स्वभावपरिणामगुणैःप्रयोज्यः ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ हे नाथ ते दि
व्यध्वनिर्भवति हे नाथ ते तुम्हारी जो है दिव्यध्वनि दिव्यवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रत्नजोहैंमसोंनेके॥ नवपंकजनीतकमलन॥ तिनकाजोपुंजसमू
हतिसकीजोकांतिकरिहैदीप्तितिसकरि॥ पर्युल्लसन्नखमयूखशि
खाभिरामौ॥ पर्युल्लसत्जोहैदीप्यमांन॥ नखमयूख॥ नखेनख
नजौकिरण॥ तिनकीजोसिखातिसकरि अभिरामअतिसुंदरहै
सोनेकेकमलनकौदीप्तिकरि अत्यंतिदैदीप्यमांनजोहैंकिर
ण तिनकरिसोभायमांनहै॥ भगवंतकेचरणकमलनविर्षे॥ काव्य॥ इ
त्थंयथातवविभूतिरभूज्जिनेंद्र॥ धर्मोपदेशनविधौनतथापरस्य
यादृक्प्रभादिनकृतःप्रहतांधकारा॥ तादृक्कुतोग्रहगणस्यवि
काशिनोपि॥ ३७॥ अर्थ॥ हेनाथ इत्थंयथातवविभूतिरभूत
इत्थं इसप्रकारजोपूर्वेकही॥ यथाजैसी॥ तवविभूतिः॥ तुम्हारीवि
भूतिताकीजोशोभा अभून् होतिभई॥ धर्मोपदेशनविधान

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्व भाषा तिनका स्वरूप स्वभाव तिस विषैं प्रयोग्यपणा तुंकीति
स विषैं ऐसी नमथांनकी दिव्य ध्वनि है ॥ जिसमैं सम ही भाषा
के स्व[illegible]भावकूं का परिणमन पाइए ॥ ३५ ॥ काव्य ॥ उन्निद्र
हेमनवपंकजपुंजकांति ॥ पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरा
मौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः ॥ पद्मानि तत्र विबुधाः परि
कल्पयंती ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ हे जिनेंद्र यत्र तव पादौ पदानि धत्तः हे जि
नेंद्र ॥ यत्र जहां ॥ तव पादौ तुम्हारे पाऊं ॥ पदानि पैंडनिकौं धत्तः ॥
करि ये धरै हैं ॥ तत्र विबुधा पद्मानि परिकल्पयंति ॥ तहां विबुध जो
है देवता ते पद्म जो हैं कमल तिनहि परिकल्पयती ॥ रचै है जहां ज
हां तुम पांऊ धरौ हौ ॥ तहां तहां देवता स्वर्णमई कमल रचि धरै हैं ॥
कैसे हैं तुम्हारे पद ॥ उन्निद्र हेमनवपंकजपुंज कांति ॥ उन्निद्र विक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिनां ही कर सकै है ॥ तैसी तुम्हारी वरा वीर्य, और देव की शोभ
नां ही ॥ ३७ ॥ काव्य ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपं ॥ ऐरावताभमिभमुद्धत
मापतंतं ॥ दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानां ॥ अर्थ ॥ हे
नाथ रावताइ पास्हले आपतंतं इभं ॥ ऐसा पास्ले हाथी कौं आ
वता देखि करिकें ॥ भवदाश्रितानां पुरुषानां ॥ भवत तुम्हारे
आश्रित जो पुरुष है तिनकौं ॥ भयं नो भवति ॥ भय नांही होय
हैं ॥ कैसा है हाथी ॥ श्च्योतन्मदं चूवै जो है मद तिसकरि ॥ आ
विल मलीन है ॥ विलोल जो चंचल ॥ कपोल मूल गंडस्थल
तिन विषै ॥ मत्त मतवाले जो है भ्रमर ॥ भ्रमत उडते भ्रमर तिन
का जो नाद गुंजार तिसकरि विवृद्ध वध्यो है ॥ कोप जो धजिकौं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथापरस्य:॥ समोसरण विषें काऊउपदेश कथनसंमयधर्मका
जोउपदेशताकी विधि॥ नतथापरस्य॥ तथातैसी ऽअपरस्य:॥
ऽऔरदेवताकी नांही॥ शमोसरण विषें धर्मोपदेसदयें तें जोतु
म्हारी शोभाऊई॥ तैसी शोभा ऽऔरकाऊकी नांही॥ तोईसवा
तका ऽआश्चर्य नांही॥ ताका दृष्टांत कहियेहैं॥ यादृक्प्रभादि
नकृत॥ प्रहतांधकारा अनानवति॥ यादृक् जैसी दिनकृत॥
सूर्यकी॥ प्रहतांधकारा ऽअंधकारकी हरणहारी प्रभा ऽव
तिसी तिहैं॥ तादृक् कग्रहगण स्य कुत:॥ तादृक्तैसी दीप्ति
ग्रहगणस्य ताराणगणनके॥ कुत: कहांतें होय॥ कैसेहैं तारा
गण॥ विकाशिनोपि॥ यद्यपि प्रकाशवंतहैं॥ ऽअलपतेंदेदीप्य
मांनहैं॥ तारागणकहियेनक्षत्रगणतेंथापिसूर्यकीप्राव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहे॥ कैसे हैं तुम्हारे भक्त विजितदुर्जयजेयपक्षाः॥ विजित जीते हैं
दुर्जय जीतवे कौं कठिन जेय वैरीन के पक्ष जिनकुने॥४३॥ काव्य॥ अं
भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्रे॥ पाठीनपीठभयदुल्वणवाडवा
ग्नौ॥ रंगतरंगशिखरस्थितपानपात्रा स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणा
द्व्रजंति॥४४॥ अर्थ॥ हे नाथ भवतः स्मरणात् तुम्हारे स्मरण ते
पुरुष जो हैं ते॥ अंभोनिधौ त्रासं विहाय व्रजंति॥ समुद्र विषें त्रासं वि
हाय डर कौं छांडि करि॥ व्रजंति कहिये चले जांहि हैं॥ कैसा है समुद्र
क्षुभित भीषण नक्रचक्रे॥ पाठीनपीठ भयदोल्वण वाडवाग्नौ
क्षुभित क्षोभकौं प्राप्त भये॥ भीषण भयानक जे नक्रचक्र जो जल
चर जीव॥ अरु पाठीनपीठ मत्स आदिक भयद भय का देनहारा
उल्वण कहिये उग्र ऐसी वडानल अग्नि जा विषें ऐसा है॥ समुद्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एलभंते॥ ३९॥ टीका॥ हे नाथ त्वंत्पादपंकजवनाश्रयिण
हे नाथ त्व तुम्हारे पादपंकज जो चरणकमल तिनका जो वन॥ ति
स विषैं आश्रयिण: जे पुरुष रहै हैं॥ ते पुरुष जयं लभंते॥ ते पु
रुष युद्ध विषैं जीत कौ पावै है॥ कैसा है युद्ध॥ कुंताग्र भिन्न
गज शोणित वारिवाह॥ वेगावतार तरणातुर योध भीमे॥ कुं
ताग्र बरछी का अग्र भाग ताकरि॥ भिन्न विदारे जो गज हाथी
तिनका जो शोणित रुधिर सोई भया॥ वारिवाह जल तिस
का जो प्रवाह॥ तिसका जो वेगावतार॥ सिताब चलना॥ तिस
के तरणे कों आतुर भये हैं॥ जो जोधा तिनकरि भीम भयानक
है॥ ऐसा संग्राम तिस विषैं हाथीन के रुधिर का प्रवाह॥
ऐसे चलै हैं॥ तिसकौं योधा तिर सकते नांही॥ ऐसा भयान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुंभ गलतु उज्वल शोणित तांकै॥ मोक्ताफल प्रकर नपैरै ऐसे जो मु
क्ताफल मोती तिनके जो अकार समूह तिन करि भूषित
कहिये मंडित किया है॥ भूमि भाग प्रथ्वी भाग जिनने
ऐसा है सिंह॥ जिन्नें ऐसे हाथी मारे॥ जिनके कुंभस्थल
विषैं तैं अनेक मोती गिरे प्रथ्वी विषैं परे हैं॥ बद्धक्रम कैसा
है सिंह॥ बद्धक्रमः॥ बांधे हैं क्रम पद जिसनें कुलांचल मा
रिकै आया है॥ तुम्हारा चलिवे तपुरुषके साह्है॥ क्रमगत
सिंह कै आयो पांवकूं विषैं आया है॥ तो भी तुम्हारे पदक
मलन की सेवातें वहां सिंह न मारि सकेगा॥ ३९॥ काव्य॥ क
ल्पांतकालपवनो॥ द्धतवह्निकल्पं॥ दावानलं ज्वलित
मुज्वलमुत्स्फुलिंगं॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमाप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ऐसो है॥ गंडस्थल विषें भ्रमर रनमें गुंजार तें महां क्रोध वंत
हैं॥ बहुरि कैसो है॥ ऐरावता नें॥ ऐरावत हाथी सो है॥ बहुरि
कैसो है॥ उद्धतं॥ महां प्रचंड है॥ ऐसे हाथी कों देखि भय न
उपजै॥ भगवत के सेवन हारे जो पुरुष हैं तिन कों॥ ३८॥ काव्य
भिन्नेभकुंभगलदुज्वलशोणिताक्त॥ मुक्ताफलप्रकरभूषि
तभूमिभागः बद्धक्रमः॥ क्रमगतं हरिणाधिपोपि॥ नाक्राम
ति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते॥ ३९॥ अर्थ॥ हे नाथ हरिणा
धिपापि॥ हरिणाधिप जो है सिंह सो भी ते क्रमयुगाचल
संश्रितं पुरुषं॥ ते तुम्हारे जो हैं क्रमजुगा दोऊ चरणकमल
सो ई भया अचल पर्वत विषें आश्रित जे पुरुष हैं॥ तिन हि
सिंह न आक्रामति नांही मारे हैं॥ कैसो है सिंह॥ भिन्ने भ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्ता ॥ ३२ ॥ पतंतं आवै है ॥ ऐसी है आगि ॥ तुम्हारे नाम रूपी जलने बु
झै है ॥ ४० ॥ काव्यं ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं क्रोधोद्धतं
फणिनमुत्फणमापतंतं ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशं
कस्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ४१ ॥ अर्थ ॥ यस्य
पुंसः हृदि त्वं नाम नागदमनी ॥ जिस पुरुष के हृदय विषैं
तुम्हारे नाम नागदमनी है ॥ सः निरस्तसंकः सो शंका तैं
रहित पुरुष क्रमयुगेन ॥ अपनें दोन्यौ पांवकु करि फणि
न आक्रामति फणी जो है सर्प ता हि आक्रामति कहि
ए दावै है ॥ तो भी वह सांप काटता नांही ॥ कैसा है वह स
र्प ॥ रक्तेक्षणं ॥ लाल हैं नेत्र जाके ॥ बहुरि कैसा है वह स
र्प ॥ समदकोकिलकंठनीलं ॥ समद मद संयुक्त ॥ औ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तें तं॥ त्वन्नामकीर्तिनजलं समयत्यशेषं॥ ४०॥ काव्य॥ हे नाथ
त्वन्नामकीर्तनजलं॥ तुम्हारे नांमका जो है कीर्तन सोई अमृ
तजल सो अशेषं दावानलं॥ समस्त जो है दावानल अग्नि
उ अगिण॥ ताहि समस्त बुझावै है॥ तुम्हारे नांमतै अगिण॥
का नाश मिटता है॥ कैसी है अगिण॥ कल्पांतकालपवनो॥
द्धतवह्निकल्पं॥ कल्पांतकाल जो है प्रलयकाल तिसका जो
पवन ताकरि॥ उद्धत उगी जो है वह्नि बलते है॥ बहुरि कैसी है॥
अगिण॥ ज्वलितं दैदीप्यमांन है॥ बहुरि कैसी है॥ उत्स्फुलिंग
उठे है॥ स्फुलिंगा विषे॥ यह अगिण कहां करि विस्फुलिंग उठी है
विश्वं जो है जगत ताहि जिघत्सुमिव खाय घालेगी॥
बहुरि कैसी है सन्मुखं आपतंतं॥ सनमुख सनमुख आ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कैसें हरि है सो कहै हैं ॥ उद्यत दिवाकर मयूख शिखापविद्धं तम
इव ॥ अर्थ ॥ उदय होत जो उद्यत दिवाकर सूर्य तिसकी मयूख किर
णेंका [illegible]ण ॥ तिनकी जो शिखा ज्वाला करि अपविद्धं कहिये दूरि
किया तम इव अंधकार जैसें ॥ तैसें तुम्हारे स्मरण तैं संग्राम
विषैं ॥ राजानका बल ऐसा हरि होय ॥ कैसा है बल वल्गत्त
रंग गज गर्जित भीमनाद ॥ वल्गत जो वाहूलैत नये तुरंग घोडे
अरु गज गर्जित कहियें हाथीनका गाजिना तिनकरि भीम
नयानिक कहैं नाद जो शब्द जा विषैं जिस बल अपना सेना
मैं अनेक हाथी घोडेनका कुलाहल है सो ऐसा बल तु
म्हारे नाम से नाश जाय है ॥४२॥ काव्य ॥ कुंताग्र भिन्न गज
शोणित वारि वाह ॥ वेगावतार तरणातुर योधभीमे ॥ युद्धे ज
यं विजित दुर्जय जेय पक्षा ॥ त्वत्पाद पंकज वनाश्रयि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोकिला तिस का जो कंठ हूतनी आहे कंठ जाका ॥ कोकला के
कंठवल का आहे ॥ वकुरि केसा है ॥ क्रोधीहू ले ॥ क्रोधकरि अ
चंडु है ॥ वकुरि केसा है ॥ उत्फणं ॥ उगया है फण जाकौ ॥ आ
पतेतें सन्मुख आवै है ॥ ऐसे सरप का भय तुम्हारे नाम
मंत्र ग्रह एसें जायहैं ॥ ४१ ॥ काव्य ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जि
तभीमनाद ॥ माजौ चंचलवलवतां मपि भूपतीनां ॥ उद्यद्दि
वाकरमयूखसिखापविद्धं ॥ त्वत्कीर्तनात्तम इवासु भि
दामुपैति ॥ ४२ ॥ अर्थ ॥ हे नाथ आजौ वलवतां अपि भू
पतीनां वलं ॥ आजौ संग्राम विषें ॥ वलवंता भूपती
नां वलं ॥ [illegible]तजो है भूपती तिन का जो वल सैं नासौ ॥ त्वत्की
र्तनात ॥ तुम्हारे नाम स्मरणतैं ॥ आसु दंउ पैति ॥ आसु क
हियें सीघ्र हौ ॥ भिदा कहियें ना[illegible] उपैति आप्त होय है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॰अधिकाई करि नाना काहि ये पीडित है। वकारिके से है। सो च्योदशां
उपगता अच्युत जीविताशा ।। हरि र्नई है जीव वेने की ॰आस जिनकी
नकारिके से हैं। त्वत्पाद पंकज रजो अमृत दिग्ध देहा ।। त्वत तुम्हारे
जो है पदकमल तिन जो है रज धूलि सोई नया ॰अमृत तिस करि
दिग्ध लपेटी है देह जिन में ।। हे नाथ जे मनुष्य जलंधर रोग पीडि
त है। ते तुम्हारे पदकमल की धूरि शरीर कों लगावें तो रोग का ना
श होकर कामदेव तुल्य शरीर तत्काल ही होय ।। ४५ ।। काव्य ।।
॰आपाद कंठम रु शृंखल वेष्टितांगा ।। गाढं बृहन्निगड कोटि नि
घृष्ट जंघा ।। त्वन्नाम मंत्रमनिशं मनुजा स्मरंतः ।। सद्यः स्वयं विग
त बंध भया भवंति ।। ४६ ।। अर्थ ।। हे नाथ मनुजा त्वन्नाम मंत्र
॰अनिशं स्मरंतः ।। हे नाथ मनुजा जो मनुष्य सो त्वन्नाम तुम्हारे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसविषैंकैंसा है तुम्हारेभक्त॥ रिंगत् तिरंग शिखर स्थितयानपात्रा
रिंगतडरेहे॥ जोहैतरंग तिनिका शिखर जो ऊपरि॥ भातिता विषैं स्थि
रस्यो है॥ यानपात्र जिहाज जिनका है नाथ तुम्हारे स्मरणतें भ्र
यंतही भयानक समुद्र के विषैं तुम्हारी भक्तिन का जो जिहाज जल
तरंगनके ऊपर चलाजाय है॥ भय न होय है॥ ४४॥ काव्य॥ उद्भूत
भीषणजलोदरभारभग्ना॥ शोच्यादशामुपगताश्च्युतजीविता
शाः॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहाः॥ मर्त्याभवंतिमकरध्वजतु
ल्यरूपा॥ ४५॥ अर्थ॥ मर्त्याभवंतिमकरध्वजतुल्यरूपा॥ मर्त्याजो
है मनुष्य सो मकरध्वज कहिऐ कामदेव की बराबरि रूपवंत होय है
कैसे है मनुष्य॥ उद्भूत भीषण भयानक जलोदर भार भग्ना उद्भूत
जो उत्पन्न भया॥ भीषण भयानक जलोदर रोग तिसका जो भार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥भक्तामर॥
॥टू॥

व॥ यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते॥ ४३॥ काव्य॥ यः मति
मान् इमं तावकं स्तवमिमं तस्य भयं आशु नाशं उपयाति॥ मिथ्याडं
व॥ मत्तद्विपेंद्र मृगराज दवानलाहि॥ संग्राम वारिधि महोदर बं
धनोत्थं॥ इमं स्तवय॥ अर्थ॥ यह मतिमान् जो बुद्धिमान पुरुष
इमं॥ इस तावकं॥ तुम्हारे स्तवं॥ स्तवन को अधीते॥ कहिये पढै है
तस्य भयं आशु नाशं उपयाति॥ तिस पुरुष का भय नाश को प्रा
प्ति होय है॥ काहे करिकें॥ मिथ्याडंब॥ भय करिकै॥ तुम्हारे भय
करिके भागि जाय हैं॥ कैसा है भय॥ मत्तद्विपेंद्र मृगराज द
वानलाहि॥ संग्राम वारिधि महोदर बंधनोत्थं॥ मत्तद्विपेंद्र
मतवाला हाथी॥ १॥ मृगराज जु सिंह॥ ३ दावानल॥ अग्नि॥ ४
सर्प॥ ४॥ संग्राम॥ ५॥ वारिधि॥ ६॥ महोदर व्याधि॥ ७॥ बंदी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाममंत्रतुम्हारेनामरूपीमंत्रताहि अनिशंस्मरंतः॥ निरंतरहीस्म
रणकरतेसंते॥ सद्यस्स्वयंविगतबंधभया भवंति॥ सद्यतत्कालही
स्वयं आपुहीतें॥ विगतिकहिए रहितनिर्भयहोयहैं॥ कैसेहैंवेपुरु
ष॥ आपादकंठमुरु शृंखलवेष्टितांगा॥ आपादकंठकहिए
पादतेंलेकरीगलेताई॥ अत उरुशृंखलभारीसांकलतिनकरि
वेष्टितांगा॥ वेष्टाहै अंगशरीरजिनका॥ चकुरीकैसेहैं॥ गाढंबृह
न्निगडकोटिनिघृष्टजंघा॥ गाढं अत्यंतही॥ बृहत निगड बेडी
वेडी॥ तिनकीजोकोटिकहिए अनी॥ तिनकरि॥ निघृष्टजोघि
संजंघाजिनके॥ ऐसेपुरुषतुम्हारेनामस्मरणतेंबंदीषानातें
छूटेहैं॥४६॥ काव्य॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहिसंग्रा
मवारिधिमहोदरबंधनोत्थं॥ तस्याशुनाशमुपयातिभयंभियेव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम

विषे॥धरतधारेहैं॥केसाहै स्तोत्ररूपमाला नक्षत्राम
त्तवगुणेनिबद्धां॥भक्तिकरि॥भषासोकरिअर्थो
तमैं मानतुंगआचार्यानेतवतुमारेगुणैंगुलोक
रिकैंगुणरूपसूत्रनकरि॥निबद्धांगोहीहैगूंथी
है॥वक्रुरिकैसीहै॥रुचिरवर्णविचित्रपुष्पांरुचि
रशोभायमानजोहै॥वर्णअक्षरसोईहै॥विचि
त्रनानाप्रकारकेफलजामैं॥जोकोईतुमारास्तोत्र
रूपमालासदाकंठविषेंराखेहै॥तेस्वर्गलोकमे
सलक्ष्मीकोपावैहै॥अवस्यमेवनिश्चयसेंा॥४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खाना ॥ ८ ॥ यह आठ प्रकार का भय जो उत्पन्न होय है ॥ अ
थवा उत्यंक हियें उठे सो तुम्हारे नाम रूप स्तवन तें नस्य
प्रनाश ॥ नाश कों प्राप्त होय है ॥ ४७ ॥ काव्य ॥ स्तोत्रस्रजं त
व जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां ॥ भक्त्या मया रुचिर वर्ण विचित्र पुष्पां ॥
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं ॥ तं मानतुंगमवशा समुपैति
लक्ष्मी ॥ ४८ ॥ अर्थ ॥ हे जिनेंद्र अवसा लक्ष्मी तं मानतुं
गमुपैति ॥ अवसा जो है स्वाधीन लक्ष्मी ॥ मोक्षलक्ष्मी ॥ किसी
केवसि नहीं ॥ तं मानतुंगं तिस मान करि ऊंचे पुरुष कों उपै
ति प्राप्ति होय है ॥ सो वह पुरुष कोंन है ॥ यः ॥ जनः ॥ यह स्तोत्रस्र
जं अजस्रं कंठगतां धत्त: ॥ यः ॥ जनः जो पुरुष यह इस लोक विषें
स्तोत्रस्रजं ॥ स्तोत्र रूप माला ॥ अजस्रं ॥ निरंतर कंठगतां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्कामर

१९

हंकार नाम अ
क्षर एक अष्टदल घडीका
कमल ताके बीचि कर्णिका में अ
सो अक्षर अरु जो बहल अक्षर ओंकार
०॥ ताकरि वेष्टितम॥ अर तिस कमल की
अष्ट दिशानि में अष्ट पांखडी तिनमें अष्ट
वर्ग जे॥ अ आ इ ई॥ उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ
ओ औ अं अः॥ क ख ग घ ङ॥ च छ ज झ
ञ॥ ट ठ ड ढ ण॥ त थ द ध न॥ प
फ ब भ म॥ य र ल व॥ श ष स
ह॥ तिन करि मं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८॥ इति श्री भक्तामरस्तोत्र मानतुंगाचार्य्य विरचित
टीका सहित संपूर्णं॥ शुभं भवतु लोकानां॥ ६५५॥ ००

६०॥ ॐ नमः॥ सिद्धेभ्यो॥ अथ श्री सिद्धचक्र महाराज की
पूजा का आरंभ करिये है॥ अथ प्रथम स्थापना कहे हैं॥ ऊ
र्ध्वाधोरयुतं सबिंदु सपरं॥ ब्रह्म स्वरावेष्टितं॥ वर्गापूरि
त दिग्गतां बुजदलं तत्संधि तत्वान्वितं॥ अंतः पत्र तटे
ष्वनाहतयुतं॥ ह्रींकार संवेष्टितं॥ देवं ध्यायतः॥ मुक्ति
सुभगो॥ वैरीभ कंठीरवः॥ १॥ अर्थ॥ ऊपरि अधर
कार करि युक्त अर बिंदु कार सहित अर सामपर करि ह्रि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सिद्धानं॥ श्रीसिद्धिपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वान
नं॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो
भव भव वषट् सन्निधापनं॥ अर्घ॥ ह्रां संवौषट् नाम मंत्रक
रि इहां आवो आवो ऐसा आह्वाननका संकल्पकी पाठः
ठः मंत्र करि इहां तिष्ठो तिष्ठो ऐसा स्थापनका संकल्पकी पा
वषट् मंत्र करि मेरै निकट होऊ॥ ऐसैं निकटकरनेका संक
ल्पकीया॥ काव्य॥ निजमनोमणिभाजनभारया॥ समर
सैकसुधारसधारया॥ सकलबोधकलारमणीयकं सहजसि
द्धमहं परिपूजये॥१॥ जलं॥ अर्घ॥ अपना मन सोही जो
मणिमय भाजन तिसमैं भरया जो साम्यभावरूप अमृत
रसता की धारा करि सकल ज्ञान की कला करि रमणीय जो
जोत्यानाविक अर्थ नो निज स्वभावतैं उपज्या सिद्धता हिम

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तऽम्र ऽप्रक्षा
खंडी कै॥ वी चि ऽप्रक्षं
घितें तत्ता न्वित क ह्नि ए॥ णमो ऽप्र
रहंताणं॥ ऽप्राउ जाप त हि॥ ऽप्रप
निका ऽअंत न विषें ऽप्र नाह्नत जौं ही कार
का वेष्टित ऽऐसा ऽअक्ष रात्म कदेव क्रं स
ध्यावे है॥ सो वैरि रूप न क हि ए ह स्ती ता
क्रं कं टी र क क हि ए॥ सि हरूपदोय है॥
हां वैरी जीव का मो ह नी या दि
कर्म है॥ ९॥ ॐ ह्रीं णमो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥सिद्धज॥
॥ध०॥

ष्टौ ध्रया ॥ परमयोगबलेन वशीकृतं ॥ सहजसिद्धमहंपरि
पूजये ॥ ध ॥ पुष्पं ॥ अर्घ्यं ॥ मैं जो हूं सो समयसार जो शुद्ध आत
माकी परणति सो ही पुष्पनिकी पंक्ति ताकरि सहजसिद्ध
ताहि पूजूं हूं ॥ कैसी कहै समयसार रूप पुष्पमाला स्वाभा
विक जो कर्म कहिये क्रिया सो ही दल ताकरि सोधी हुई है ॥
और कैसे क हैं सिद्ध परमयोग जो शुक्लध्यान ताकरि व ॥
शीकृत कहिये आपके स्वभावरूप होय है ॥ ध ॥ अक्षतने
वसुदि वृं नैवेद्य के विहत जाति जरामरणांतकैं ॥ निरवधि
अचुतात्मगुणान्वयं ॥ सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ध ॥ नैवेद्यं
अर्घ्यं ॥ विहत कहिये नष्ट कीया है जन्मजरामरण अरु रोग
जिननैं ॥ ऐसा जो तिनांकी या ज्ञान तें ही जैं नैवेद्य तिनक ॥
रि मुक्ति दार हित । अनंत का आत्मा के गुणनि का स्थान जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवचनकायकरि हूं जजूं ॥ ४ ॥ सहजाकर्मकलंकविनाशनैं अम
ल भावसुवास वासमु चंदनैं ॥ अनुपमान गुणावलिनायक स
हज सिद्ध महपरपूजये ॥ चंदनं ॥ अर्घ ॥ आपनैं सो थिरी उपज्या
जो अनादिकालका कर्मरूप कलंक तिनके नाशकरनेवाले जे
मोहमलरहित भावतेंही जे चंदन करिमैं सहज सिद्धिताहि पूजुं ॥ कैसाक है सिद्धि उपमारहित गुणनिकी पंकतिका नायक है
॥ सहज भावसुनिर्मलतंदुलैः सकलदोषविशालविशोधनैं
अनुपरोधसुबोधनिधानकं सहज सिद्ध महं परिपूजये ॥ ३
अक्षतं ॥ अर्घ ॥ समस्त दोषनिकी विस्तीर्ण जाके नाश करनेवा
ले असे हमारे आत्माके निर्मलभावतेंही तंदुलतिन करिकें
अरोक निरावरण ज्ञानका निधान जो सहज सिद्ध ताहि पूज
ूं ॥ ३ ॥ समयसार सुपुष्प सुमालया ॥ सहजकर्म करेण वि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेजै आवर्तादिक मललिन का नाश करनें वाले ऐसे जे अ
पनें गुणनि का अक्षय रूप दीपलिन करिकै निर्मल ज्ञान स्व
रूप जो अनंत सुखरूप सिद्ध ताहि पूजहूं ॥ १ ॥ परम भाव
फलावलिसंपदा ॥ सहज भावकुभावविशोधया ॥ निजगु
णस्फुरणात्मनिरंजनं ॥ सहजसिद्धिमहं परिपूजये ॥ २ ॥
फलं ॥ अर्थ ॥ स्वाभाविक ज्ञानदर्शन स्वभावके प्रभाव
करि खोटे भावनि की शुद्ध करनें वाली जो उत्कृष्ट भावरू
प फलसमूह की संपदा करि कें अपनें गुणनितें प्रकट
प ॥ स्वरूप आ कर्म का अंजन जो लेप करि रहित जो सह
ज सिद्धि ताहि मैं पूजं हूं ॥ २ ॥ नेत्रोन्मीलनविकार भावनि
वहे ॥ रत्यंत बोधावहे ॥ वामे वा सन्तु सुख रामचक्र कैः सं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहजसिद्धताहिपूजंहूं ॥५॥ सहजरत्नस्वरूपचिन्ह तिंदीपनेंकरि
चिविभूतितनम अविनाशनें ॥ निरवधिसुविकाशआकाशनें
सहजसिद्धमहंपरिपूजिये ॥ ६॥ दीपं ॥ अर्घ्यं ॥ सहजरत्नजेस
म्यग्दर्शनज्ञानचारित्रयामें स्वरूपचिह्नजो दर्शज्ञानतातें
आत्मतत्वदीपनकरनेंवारो आरज्ञानकी जोत्य चूरनस
लिलिसकरि जो मोह अंधकारकैनाशकरनेवाले भावदीप
कनिकरि आत्मर्यादारहित जो उद्योतताकाप्रकाशक जो
केवलज्ञानस्वरूप भावदीपक तिनकरि सहजसिद्धजोताहि
पूजंहूं ॥६॥ निजगुणअक्षयरूपसुधूपनें ॥ स्वगुणघातिमल
अविनाशनें ॥ विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं सहजसि
द्धमहंपरिपूजये ॥७॥ धूपं ॥ अर्घ्यं ॥ गुणनिकूंघातकरनेंवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो गुणि ॥ पुष्कराभि स्नान स्तौं हूं नीमिं स्तल तें सिद्धा नु वि॥
शुद्धोरपानू ॥१॥ अर्घ ॥ विशुद्ध क हिद निर्मल उद्योतं
प्राप्त नए ॥ औसे सिद्ध जिनमैं निरंतर स्तवन करूं ॥ के
से क हैं सिद्ध जिननैं आराधन करिकैं ती ॥ र्थंकर जे हैं ते
अविनाशी लक्ष्मी जो मोक्ष ताहि प्राप्त भए ॥ कैसे कहैं ती
र्थंकर ॥ तीन लोक के ईश्वर जो धरणेंद्र नरेंद्र देवेंद्र तिन करि
वंदनीक हैं चरण जिनके ॥ अर तो कहा है प्रचंड मन जिन्हौं नें
अरु संतुष्ट भए हैं ॥ वहुरि कैसे क हैं ॥ सिद्ध सम्यक्त्व दर्शन ज्ञा
पिक सम्यक्त्व अनंतज्ञान अनंतवीर्य अव्याबाधादि
अनंत आत्मीक गुण तिन करि युक्त हैं ॥ १॥ चिन्मूर्स
ना द्वंद्व शांत निरंस ॥ निराभय निरभय निरमल हंस सु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीपधूपैः फलैः॥ पा॥ क्षिप्ताम णि अद्भुत भाव परमं॥ ता नात्म
कैरर्चये॥ सिद्धान्नरसाद्य समाधबोधम चर्चये॥ स चर्चये पामो
घ्यं॥ ८॥ अर्घ॥ अर्घ॥ जो पुरुष अचिंतामणि समान अद्भुत
भाव अर उत्कृष्ट ज्ञान स्वभाव जे जल गंध अक्षत पुष्प स
मूह नैवेद्य दीप धूप फल तिन करि सिद्धनिनै पूजे है ताकै
नेत्रनिका उघाडवत॥ प्रकाश नाश समूह करि असंसा
नकें अर्घ होय है॥ ऐसे सिद्धनि कूं हम जजे है ते कु अनुभव
रूप अविनाशी ज्ञान जो है होय तैसे पूजूं हूं॥ ९॥ अथजय
माल॥ काव्यं॥ त्रैलोक्येश्वर वंदनीय चरणा॥ प्रापुः॥ श्रि
यं शाश्वती॥ पा॥ यानाराध्य निरुद्ध चंड मनस॥ सतो पि ती
र्थंकरा॥ सत्सम्यक्त विबोध वीर्य विशदा॥ व्याबाधता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नरे विमोहे हे निर्मल सिद्ध समूह आप प्रसीदं जायवं
तेरहो॥४॥ निराकरित दुःकृत कर्म विभावा ग्रासदा मलवर्जे
लके तल निवास भवोदधि पारंगत विमोह॥ सुप्रसि
विभु सु सिद्ध समूह॥४॥ अर्घ्य॥ हे नित कर एक पाहे
दुः॥ कृत करि ए पाप जो ने हे कर्म पाप ग्रोहित हे सदा का अभि
मेल केवल ग्यान हे रमणे का निवास जाचा हे संसार समु
द्र का पार गामी हे सांत रूप हे विमोह हे सु सिद्ध समुह अप
प्रसीदं॥५॥ अनंत सुखामृत सागर धीर॥ कलंकरजो
भर भूरि समीर॥ विखंडित काम विराम विमोह॥ प्रसीद वि
सुद्ध सु सिद्ध समुह॥५॥ अर्घ्य॥ हे अनंत सुख रूप अमृ
त का समुद्र हे धीर हे कर्म कलंक रूप रज के समूह

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धाम विबोधनिधान विमोह॥ ऐसौ रविंव शुद्ध सु सिद्ध समु
हा॥४॥ अर्घ्य॥ हे विलंक हि ए वीतराग है सनातन है शांत
सो नष्ट हित है निरंसि अंसक अमनाम है निरामय नाम हित है
निर्भय है निर्मल है सहे सुधाम कहिए तेज का धारक है वि
बोधनिधान है विमोह रहित है विंव शुद्ध है सु सिद्ध समुह
आपप्रसीद कहिए प्रसन्न है॥ मेरे भावनि की उजल
ताकरौ॥५॥ विहरित संसत भाव निरंग समास्तत रहित
है दविलंग॥ अवंधक पाप विहीन विमोहा॥ ऐसौ रविं
व शुद्ध सु सिद्ध समुदा॥६॥ अर्घ्य॥ हे हरि कीया है संसारी अ
भाव जानें हनि रंग शरीर रहित है सम भावरूप अंमतंव
रिग्र ली है देव है संगा हित है वंधे हित है कषाय विहीन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरहंजिविहायवसदोदयविक्रमहेध्याविमोहिप्रसीद
विभुसुसिद्धसमुद्ध ॥७॥ अर्थ ॥ हे ना अमरनि करि विदि
तहे निर्मल भाव हे अनंत मुनीश्वरनि करि हृदय है विका
राहित हे सदोदयरूप हे समस्त का महा स्वामी है विमो
हहे विभुहसु सिद्ध समुद्ध आपप्रसीद ॥८॥ विदं नवि
लख विरोध विनिद्र ॥ परापर संकर संकर सार वितंद ॥
विकोपविरूप विशंकविमोह ॥ प्रसीद विभुहसुसिद्धस
मुद्ध ॥९॥ अर्थ ॥ हे रूपटरहित हे अभार हित हे दोष र
हित हे निद्रादरहित हे पापका भिन्न ने भिसार भूतवि
वर्की हे कोपरहित हे रूपरहित हे शंका रहित हे विमोह हे प्र
सिद्ध हे सुसिद्धसमुद्ध आपप्रसीद ॥१०॥ जरामरणोज्जीत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केउ भाव ने हंस चंड पवन है हे कोमल के खंडन हे अंतर हित
हे विमोह हे विशुद्ध सुसिद्ध समूह आप प्रसन्न होऊ॥५॥ वि
कार विवर्जित तर्जित शोक॥ विबोध सुनेत्र विलोकित लो
क॥ विहार विराव विरंग विमोह॥ प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध सम
ह॥५॥ अर्घ॥ हे विकार रहित हे विमोह हे विशुद्ध सुसिद्ध स
मूह आप प्रसीद॥५॥ रजोमल खेद विमुक्त विगात्र॥ निरंतर
नित्य सुखामृत पात्र॥ सुदर्शन राजित नाथ विमोह प्रसीद
विशुद्ध सुसिद्ध समूह॥६॥ अर्घ॥ हे रजमल खेद रहित हे निर
तर अनंत सुख रूप अमृत का पात्र हे सम्यग्दर्शन राजित
हे समस्त के स्वामी हे विमोह हे विशुद्ध सुसिद्ध समूह
आप प्रसीद॥६॥ नरामर वंदित निर्मल भाव॥ अनंत मुनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैल त्यसार मोत ज्ञानमैं सुसैंतैसैं असंतद्रोऊ ॥ इंम नंतिन
कैं ऐसी चांल्हा है ॥ २१ ॥ घत्ता छंद ॥ अतमसंपदयसारं चा
रुचैतन्यानिकुंपंतपरमरण निमुक्तं पदानंदोदुबंधं ॥ निरिव
लगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं ॥ स्मरतिनमतिपोवासो
तिसो येतिमुक्तिं ॥ २२ ॥ अर्घ ॥ असद्दृग्नो मम यकरि
ए आत्मद्रव्यतिनमैं सार अरनिर्मल चैतन्या है चिन्हजाका
अरपरद्रव्य रूपपरणतिकरि रहित ॥ आपमनंदि मुनिक
रिवंदन ॥ अरसमस्त गुणनिका स्थानक अरनिर्मल ऐसे
सिद्धनिकोसमूह ताहि जो समरण करै है नमस्कार करै है
स्तवन करै है ॥ सो मनुक्तं मतैं मुक्तिमैं जात होय है ॥ ॐ ह्रीं सि
द्धचक्राधिपतये अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ इतिसिद्धपूजा समाप्ते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वीतविहार विंचिंतित निर्मल निरहंकार॥ अचिंत चरित्र विद
र्प विमोह॥ प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह॥१०॥ अर्घ॥ हे जरा
मरण रहित हे गमन रहित हे विंचित निर्मल हे निरहंकार हे॥
अचिंत्य चरित्र हे दर्प रहित हे विशुद्ध हे सुसिद्ध समूह हे आ
प प्रसीद॥११॥ विवर्ण विगंध विमान विलोभ॥ विमाय विका
य विशब्द विशोक अनाकुल केवल सर्व विमोह॥ प्रसीद वि
शुद्ध सुसिद्ध समूह॥१२॥ अर्घ॥ हे वर्ण रहित हे गंध रहित
हे मान रहित हे लोभ रहित हे माया रहित हे काय रहित हे शब्द
रहित॥ हे शोक रहित हे आकुलता रहित हे केवल अप्रसहा
य हे सर्व अपरवस्तु में मोह रहित हे विशुद्ध कर्म मल रहित
हे सिद्ध समूह हे तात तात आप प्रसीद आपका सिद्धनि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पद॥ ॥४८॥ ध जानमकी ला जबोधायैकैं॥ हुंनी नरकानहींजै॥३॥ रिषभ
नाथ भगवान जगतके॥ सुरनर आन धरीजै॥ आनधरे सेपा
॥ तिग नासै॥ निहचै नांम भनीजै॥४॥ रिषभनाथसम और न
देवा॥ सेवा का हित कीजै॥ बारबार नरदेह न पावै॥ जासे ना
ह्यो लीजै॥५॥ लेलावो आमुकति सिधावो॥ काहे नरम
पडीजै॥ दोलतकहै अब सुनीयो ग्यांनी॥ आदिनाथसंगरीजै
ये॥ पद॥ २॥ ती लताकद॥ बारबार बरमांगों नाथजी॥ दीयो चरन
नकी सेवा॥ और सुष रंच बछु न चाहै॥ मिले दिगंबरदेवा॥
टेक॥ माया सुष आराजपात सब॥ इन संग नरक कसेवा॥ जो
वतीसुत अरु नातीवालना॥ इन संगमुकति नलेवा॥ भमुकति
मिलै है मुरिषजनकौ॥ सबजुजागतजेवा॥ धरमरतिहिरदा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ दौलतरामजी कृतपद लिष्यते॥ अथ रागपरजाती लिष्यते॥ प्रारंभः

नमो नमो अरिहंत के चरणं॥ वारवार वलिहारी॥ कोटिजत
न करि सीस निमाऊं॥ नमो देव सुभ मारो॥ टेक॥ अरिहंत च
रण सरण ज्यो लेवे॥ करिहै पाप अकारी॥ अरिहंत नांम ली
यां अघ नासे॥ वेद पुरांन उचारी॥१॥ अरिहंत न जैसो देव सच
देवा॥ मिटजा वे दुष भारी॥ जनम जनम के पातिक नासे अ
रिहंत नांम उचारी॥२॥ अरिहंत न जन तु पार ऐसे व॥ अन
विनती वे पारी॥ दोलत कहे यो नांव सव लहै॥ नांम लीयां अ
घ हारी॥३॥ पद॥ ह्मारा॥ रिषव तनां थ को सरणो लीजे॥ चरणन
सेवा कीजे॥ चरनसेय भवसागर तो मिटिहै॥ औरन सेव करीजे
१॥ टेर॥ अंन देव की सेवा करि कर॥ प्रांनी नरक परीजे मिन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पर॥
॥४७॥

कोई अरज कराऊं ॥३॥ कुंन से जाइ जात कहूं कुंन सैं। कोई
न नजर दिषांऊं ॥ दोलत कहै मैं तुम हूं न जाऊं ॥ निसादिन से
व कराऊं ॥४॥ पद ॥ ७ ॥ पंचमपद लिख्यं ॥ पारसनाथ अनाथ ते
नरेस्त्रा ॥ सेवासैं दुष जाई ॥ पारसनाथ नाम कै लेतां ॥ सकल
पाप अघ जाई ॥ टेर ॥ ०॥ पारसनाथ जगत जीवनो हा
सेवा उनकी पाई ॥ जो हासै वैकुं रन करि हैं ॥ मेटि अरम
की काई ॥१॥ पारसनाथ देव सम दूजा ॥ ना दिन जर कहूं भा
ई ॥ धंन पुरस नर नारी कोई ॥ जो कोई सेव कराई ॥२॥ पारसना
थ नांव जो पारस ॥ पारसती मर मिटाई ॥ मो हो अभरांन
अम धैरो न्हासे ॥ सुरज पांन दिषाई ॥३॥ ग्यांन रूप सुरज उ
गावै ॥ ऐसी सेवा नाई ॥ सेवासैं सब विघन विलावै ॥ धंन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कै मीतरा ॥ आप दिगंबर देवा ॥ ३ ॥ नाथ दिगंबर सुनौ मेरी अरजी
मुरजी आप करेवा ॥ हम अधमन कूं पार करो जी ॥ और न दीसै
देवा ॥ ४ ॥ और देव मो हि दीसत नाही ॥ जासु आज करेवा ॥
दोलत कहै कर जोडै असैं ॥ आप हाथ गहलेवा ॥ ५ ॥ पद ॥
चोथा पद लिख्यते ॥ मारगारा सिनांऊं हे ना ॥ सेवा सैं चित आऊं
और जंजाल जाल सब तजिकैं ॥ चोवीसुं जिन ध्याऊं ॥ टेक
जिन ध्यावत सैं मुक्ति मिलैगी ॥ जिनि हिरदा मांहि समाऊं
इंद्र नरेंद्र सेवा करि हैं ॥ अरिहंत नाम समाऊं ॥ १ ॥ तिंथंगरसम
और न जुं नही ॥ नां हिरदा मांहि गुनांऊं ॥ २ ॥ तिदिनां मेरे सुमर
न यो ही ॥ जिन हरष हरष गुन गाऊं ॥ ३ ॥ जे नर जनम चोवी
सुं सेवा ॥ चोवीसुं मन लाऊं ॥ चोवीसुं सम देव ल नाही ॥ मोहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पद॥ ॥४८॥ हूरि न गाई॥ जे इन आन्हूं तजे है जीवड़ा॥ पाइ पारस प्रभु सुमिर
नाई॥ ३॥ पारस नां घक हू मैं वीनती॥ मोपर होक सीहाई॥ सोमो
हमाया मांहि मनतो दे॥ ऐसा करो जी अपा॥ ४॥ दोउन न कैसे
गुनु म्हो सं नपे॥ रापंचम जुगमांही॥ औरदेत मो हूं सीमत
नांही॥ तासुं अरज करांछ॥ ५॥ पद॥ ६॥ सपतमपद लिख्यते॥
जिनमत साधे सब मत साधे॥ सुनी यो चित लगाई॥ वार वार
मिनषा तन ना ही॥ सुनन नम जी चत लगाई॥ टेक॥ मिनषा
तन सेर तननामि लि है॥ संमैं चूक पछिताई॥ ऐसो मौ सर तू
वैं आलसी॥ फिर चव मैं पछताई॥ १॥ सरसु करपसु जांनी॥
चौला॥ कहे विधि जीव धराई॥ लख चौरासी मांहीं रोल्यौ॥ नी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पारसप्रभु ताई ॥ ४ ॥ पारसनांथ गोरिते प्रांनी ॥ नहचै मोख्
समाई ॥ ऐकबार जो समुष नाषै ॥ कोटि न पाप हराई ॥ ५ ॥ नहचै
रा घटे कब र ल्यारो ॥ वै प्रभु बोडि नि नाई ॥ दौलत कहै मन
पारसप्रभु न ॥ घरमांही आगाई ॥ ६ ॥ पद ॥ ५ ॥ रागमपद लिख्य ते
आज सु मोह कमोरी आजी ॥ पारसनांथ गुसांई जनम
जनम तुम चरनन सेवा ॥ औरन चाहुं नाई ॥ टेक ॥ तुम च
रनन की सेवा कर करि ॥ केई जीव तराई ॥ नाम तुमारा सुख
स्वामी ॥ पारसनांथ गुसांई ॥ १ ॥ तुम ले बासे तैरे हैं मो
होरिधि ॥ भवजल पार लंघाई ॥ लख चौरासी जनमन लेदे
नो फिरि देह धराई ॥ २ ॥ कांम क्रोध मद लोभ घनेरे ॥ इन के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पद॥
॥४२॥

नवांनी सुंतरे ऽ अनंता ॥ मुनि जिनराज निनाई ॥ जिनवांनी
सैं पाय नौ सब ॥ कांनन मांक ऽ अवाई ॥४॥ जिनवानी की
महिमा कित सें ॥ कैसें कहें बुडाई ॥ सो नन कहे जिनवानी
धंन्य है ॥ बारंबार सिरनाई ॥५॥ पद ॥ ५॥ ऽ अथ नवलपद लि ख्यंते
जवजा भोजवसांनी नरतु ॥ ऽ अरहंत नांम लीयो जनकेरे
कांम कजहा मनसैं करी पो ॥ मुषसें नांम जप्या जकारे
टेक ॥ ऽ अवचन मुखसैं मतिचोदले ॥ परनारी चितनां
हि धरो ॥ परधनमें लाग्यो नाहि मति नाई ॥ जिनवांनी जासु
न्या जाकरो ॥२॥ ऽ अनछांन्यो जल नांही पीने ॥ कोई जीव
न मति माल्या करो ॥ दुष्यामन रोपैरन वैको ॥ विलिजद
ममतो वैराग्या करो ॥३॥ जिनके हिरदे दीपादीन ता ॥ पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व नीच देह पाई ॥ चलो सु चेतो प्रानी जलदी ॥ ये औसर न भव
जाई ॥ या औसर में ऐसे रे ना ॥ सेवा करो चित लाई ॥ ४ ॥ जिन ध
रम हूं से सेव सब ॥ तेरम हो अघ जाई सो हूं करै तु म जिन म
त साथै ॥ फिर मिन बारै हन जाई ॥ ५ ॥ पद ॥ ७ ॥ अथ पद ॥
मिन खा रे हम नी कर पाई ॥ सुन जिन वानी गाई ॥ जिन वानी
हूं वंदन करी सो ॥ पार होय भव जाई ॥ टेक ॥ जिन वानी सैं त
रै मो है दधि नम जो वसु न भाई ॥ कांन भवा जीने क जौर
रहै तुरत मुकति कै नाई ॥ १ ॥ जिन वानी सुन रा जा ऐ वत ॥ सेव
ना चित लगाई चोर मुकति हूं आरप कुं तो ॥ जिन वानी सुध
दाई ॥ २ ॥ जिन वानी सैं तरे हैं अनंता ॥ मुनि जिन राज गिनाई
जिन वानी सैं पाप नसैं सब ॥ कांन न मांऊ भवाई ॥ ३ ॥ जि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पद॥
॥पद॥

चितधरोरे॥ जो तुम हो सुंदरि के चतुर ग्रो ॥ रे नरमानो सुरनिध
रोरे॥ ये वचन जिनों के चित धर कानों॥ थिर ताराधो आपद
रोरे॥ ऐसे नवचन मिलै न हीं कबहूं चेरैरे कहैदिनधरोरे॥ ए
वीतराग की बानी सुनकर॥ का है न समक करोरे॥ दौलत रामन
हैं सु निग्रानी॥ याही समकधरोरे॥ ११॥ इती पदसमा यते॥ इती राग
परभाती समायते॥ अथ ईसरीराग लिष्यते॥ लषो हम नाथ की छ
विजी॥ जवदरसीसरसी मन की गति दुनष्ट जोंकविजी॥ टेक॥
होत अनंद जिनंद चंद को॥ नति करत सवजी॥ छत्रचमर सिं
हासन युत जों उदयाचलरविजी॥ १॥ जाके ज्ञान प्रमान लोक
सव कर तम मुक्ति धवजी॥ दोलत भक्ति करत रूचसो भवजन
म सुफल तवजी॥ २॥ इती ईसरीरागसमापते॥ अथ राग लावनी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपगारी वचन बखे॥ कांम क्रोध मद लोभ तमो होत जे॥ ऐसे हूं
तुम धरम करो॥४॥ मरवे की तुम षबर जनां ही॥ कौंन दिवस दि
न रात मरो॥ जासुं प्यारे डरि कैं चलीयो॥ कोई पाप न मिमारग्या
करो॥५॥ कौंन घडी क्या होतव होवे॥ क्या उ प तुम पर आपरो॥
कांम काज धन दौलत मांन स॥ सब जां हां के तां हां रहत धरो॥ प
सुख संपत में सब को हंस पी॥ निस दिन पास ही रहत खरो॥ रे
तलाक म मे नगि मातो॥ विपत पडे सब हरि टरो॥६॥ ऐसे रूसत
सीत नरदेवी कोई परम निठूज्या करो॥ इन के पुजे नरक सिधे
हो॥ वेद पुरांण सब कहत पुकारे॥७॥ वेस्या चोरी जुवां मद मटी॥ नं
गत मा हूरि करो रे॥ इन विसन नसें नर कासि वेहो॥ [illegible] नीरो
मति कहै धरो धरो॥८॥ ऐसे नर देवन वहरित जो नर॥ नब जीव सुनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पद॥ ॥५२॥

पूजा करलेरे करलेरे ॥ श्री वीतराग जिनदेव की ॥ टेक ॥ ज
लफल आठौं द्रव्य जु उत्तम नांचौ गाय बजाय ॥ भाव लगाय लि
यौं पूजा करि लै ॥ मन वंछित फल पाय ॥१॥ मेंडक चाल्यो कमल
लै मुख में ॥ मैं पूजों महावीर ॥ श्रेणिक के गज पग तल आयो ॥
पायो देव सरीर ॥२॥ तूंती नैं जो पूजा कीनी अक्षत संग च
ढाय तौ ताने फल अमर चढायो ॥ लह्यो सुरगमन भाय ॥३॥ नरना
री पूजा फल पावै ॥ सो फल सकै न कोय ॥ द्यौलत पूजा सिवपु
मार्ग ॥ ऊधान आगें होय ॥४॥ पद ॥ २ ॥ राग भैरूं लिख्यते ॥
नारल नवद धैतें जिन तोनौ मुख देनी ॥ टेक ॥ निरमाम
तं नौस नीडा कास नी सुविदुरिद्ध तांल मांन अगट करनक
रमकांट छैनी ॥१॥ हित अन नाहित सुपर स्ने रहे प्रदेय पुपारे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतुल विकट नव वारिधतर वै श्री जिन जग जानी ॥ गुन अ
नंत अनावंत कंतसिव करइन को ध्यानी ॥ टेक ॥ लोक अलो
क प्यो कअति विंचति सुमरो जिन वानी ॥ १ ॥ चौसठ सौ तीन चौ
त भीत अमजगत [illegible] नीं ॥ २ ॥ श्री गुरु उरधर नांसमोह
जुर सम्य [illegible] वानी ॥ समकज्ञानी जातपराए वै यो पमुक्ति
रानी ॥ ३ ॥ ती नौं सारस म्हाइ कर्म कौं मार ना सगं नीं ॥ दोलत श्री
भवतप गुलं वलि हर्ष सहित गांनी ॥ ४ ॥ इती लावनी पद संपूर्ण ॥
अथ पद लिख्यते ॥ चलो गिरनार चलो गिरनार कौं जीमन
लाय ॥ टेक ॥ नेमी सुरजहां मुकति गऐ हैं इंद्रादिक जसगा
य ॥ १ ॥ जाके वंदत पापन सै एन नौं कौ फल पाय ॥ चलौ अं
जसु निरोलत रांम की हंस किरन हम जाय ॥ २ ॥ यक्षा शापर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पद॥
॥५२॥

रनि हारे॥४॥कातिकसुदि सातें गुनगृामें॥ मंगल नए अपारे॥ मांडलपुरतें संघसहित जिन आए हम अघटारे॥ ६॥ देक जाग तिन केधर्म जांनों॥ ऐसे समय निहारे॥४॥पद॥५
॥ इतीरागपरजसंपूरण॥ अथपदरागजैनगोरलिख्यते॥ पद॥
अनुपारीमहिमा अगम अपार अनवरण अघनासजोजी
म्हाराज॥टेक॥ अजीतुमरयाम महाराज नवोद्धितार
जोजी महाराज॥१॥ अजी तुमन कसहाई नाषासक नकुछ
टार जोजी म्हाराज॥२॥ अजी तुमगुनपसुमेदक धारसुरम
सुषपारे पोजी माहाराज॥३॥ अजी गुनरहितदो पचडारसु
गसुषपाईयो जी माहाराज॥४॥ अजी नादितारे सुगम अनं
त अंरजदो लतकी लुनी यो जी माहाराज॥५॥पद॥१॥अ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रज्ञांन धनों देत ऐक ॥ आतम रस भीनी॥ ४॥ जिन मुखतें
वांनि खरी गणधर उर मांहि धरी द्वादसांग ॥ अंग रची जानें
मुनि ग्यांनी॥ ५॥ सीख मांन कुमत भांन सेवक सरधांन कें
न निज ग्यांन रु मंदर की चढन कूं निसेंनी॥ ६॥ इती राग भैरुं
समापते॥ ॥ अथ राग परज लिख्यते॥ जिनराज हमारा नां
थ जगत का प्यारा॥ टेक॥ हरि सुर नर सेवत पद जाके याति
तन का अतिपारा॥ १॥ जग दरसौ विन राग सुखी कव॥ जग
पुरस वर्ते न्यारा॥ २॥ जाकी नगति मुकति सुखदायक॥ ओर
घने गुन धारी॥ ३॥ टेकस रन चरनन को चेरो॥ चाहे सरन तिसि
हारा॥ ४॥ पद॥ १॥ राग परज॥ जिनराज प्रभो रे है धन्य भाग
हमारे॥ टेक॥ हम भव विनि ग्यांन ॥ अध मति निस जाम॥ तिन कें
जन्म सुधारे॥ १॥ हम करनी करन जरन कीनी॥ अपनी औ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पद॥
॥४५॥

ज॥टेक॥ होजी तौ जबेली चलरा कुमार वेरनतुरवालेक
जी माहाराज॥ होजी तौ जबेली नगावती वालकु समाईराय
दी माहाराज॥ होजी तौ जबेली म्रगावती थी पचेला परना
वती जी माहाराज॥ होजी तौ जबेली सुमित्रावाल सीता सुल
सावती जी माहाराज॥ होजी तौ जबेली कुंती कुंमार सुंदरप
दमावती जी माहाराज॥ होजी तौ जबेली नलकुमार विवि
धितप दांनिधो जी माहाराज॥ अजी राजुल पैही मनकु वि
चार दोलतरामभार धोजी माहाराज॥पद॥४॥हसोपद
अजी तुम जारो हजनागिरतामरंपामोपे कीजीयो जी माहा
राज॥ अजी जग मोहि कुटंबकी लाज या छै पमादी जियो
जी माहाराज॥ अजी प्रभुजी वदी या के काज राजन हिछोडी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ राग गिनगौर ॥ अजी थे तारन तरन जिहाज म्हा को अनुगां
र जो जी माहाराज ॥ टेक ॥ अजी हो नरभव तुरगत मांहद
ख करतार जो जी माहाराज ॥१॥ अजी चोरासी लख के मांहि का
ल वहु वीतियो जी माहाराज ॥२॥ अजी कहुं नरक दुख वहु पा
ईत्रास वहु पाई जी माहाराज ॥३॥ अजी तिरजंच योनि दुख पायु
वधा दिक मारियो जी माहाराज ॥४॥ अजी देव जो नि विभो पर
देख मनुष सुख नंगा कै जी म्हाराज ॥५॥ अजी थावर त्रस दुख
निगोद काल वहु वीतियो जी माहाराज ॥६॥ अजी दुख पारो
वार अपार हो लत नवंतार जो जी महाराज ॥७॥ पद ॥२॥
इती राग गिनगोर संमापते ॥ अथ राग तीज लिख्यते ॥ पद ॥१॥
तीज षेलौं गी मुकति भरतार सुमत मो हिदो जी यो जी मांहरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पद॥
॥५५॥

कौनी ॥ सुन सुन कहै नौ हिरदै धौ ॥ सो भर हू तन अति दगादे
तो है इनसंग कैसे जनम नरौ ॥२॥ मद तुम सरन लेरही जो मैं पाऊं ॥
तो मैं इनको सपन न करौं ॥ दौलतराम प्रभु म्हा पर नैन रो कृपा
तुमारी मुकति नरो ॥४॥ पद ॥५१॥ ठुमरी ॥ अब मेरो मन
मतसौं हित लागो ॥ टेक ॥ जामैं जीव दिखात न मानकौ
काथ्य न सुनत भ्रम नागो ॥१॥ वीतराग सो देव जा मैं गुरु
रूप अनागो ॥ धरम केवली भाषत जामैं जीव दया रसपागो
॥२॥ अनुत उपदेस होत सुनि जामैं ॥ अब न सुनत जीव जागो
दौलतराम अ॥२ कौ सुमरो मन जिन गुनसौं अनुरागो
॥३॥ पद ॥२॥ इति राग भैरवी संपूर्ण ॥ अथ राग सारं
ग कौ ठुमरी ॥ छवि प्यारी मन मान ॥ तुम केवल ज्ञानी हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

येजीमाहाराज॥ अजीप्र मुतुमतोचतुरसुजांननहीह
कीजियेजीमाहाराज॥ अजीप्र नरकं कनमोरद्धतारप्रीनि
तजिदीजोप्रोजीयोजीमाहाराज॥ अजीराजलयकुमन
हीदिजातमहांतपगंनिप्रोजीमाहाराज॥ अजीप्र नबा
लजतीजसचोरमुकतिपगदीजियेजीमाहाराज॥ अ
जीप्रभुनेममुकतसुमधारदोलतप्र नध्याईयोजीमाहा
राज॥ इतीरागपदतीजसमापते॥ अथरागपद भैरवीलि
ष्यते॥ पायपरोंलेरेपांयपरोंजोनेसुनीहो अरजते॥ टेक॥
तुम कोंदीनदयाललषेमेंतासो अपनोंदुषदुचरो॥ १॥ अ
षकमोहघेरहेहैं तोइनसोंकछुनांहि अरो॥ नवनकरो
सो तोतो अतिबोडेदुषनकूंसेतुवरो॥ २॥ वकुमतिमेमांसोंजो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥पद॥
॥५५॥

दायोवेरी॥ सुमिसुधिनिसारीरी॥ टेक॥ इंद्रनकीपंकतूटरी
हाड़नकीसंधछूटरी॥ काया नारीनूटी जायें जातनजांनि
ये॥१॥ बारनवरनके सो रोगनैं सरीरघेरयो॥ पुत्रऊनैं आवै
नांहो॥ औरनकी काहा चली॥२॥ नैंननकी सकति घटी न
बहटी रे इलटी चाल भई लटपटी जावै जातनवनैं॥३॥
दौलत रांमसमझ आवै अब मूकौं अजोगे कवे॥ आकुफैन
जैसें सुबले है रानी या॥४॥ पद॥१॥ राग भैरवी॥ ति छूटे
जीवरे का चेतेरी सकतिसम्हार॥ टेक॥ अनंतचतुष्टय
कौ तु स्वांमी॥ विधिवस होतखुवांर॥१॥ निजपरनतनोरीसें
नमय नाबी॥ विभावपनसौं तेरो प्यार॥२॥ दौलतजो अ
पनौं हित चाहै॥ आपा आपानिहार॥३॥ पद॥१॥ इती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टेक ॥ तुमबिनु कुनगुरत्रिभुवनस्वांमी ॥ महिमाकूक
हिनैंवणांनी ॥१॥ भालमांनजोगीसनरोतम ॥ सिवसुषकेतु
मरांनी ॥२॥ दीनबंधुदोसतनबवतसल ॥ वसु विधकोकि
एहांनी ॥३॥ पद ॥४॥ ऊसरा ॥ कोईन्मावोजायरीअनु
नेमकोसगरी ॥ टेक ॥ सुनसोरपसुनमनकाअनुरष
फिरमयोन्मनरी ॥१॥ जोरोसकलसगरीवलनइन्मो
रहरी ॥ इसमोलमाहनन्मायकेंतलकाजजोगधरी ॥२॥
न्मैसीकरीउनरीन्मैसीनकीकिनरा ॥ न्मवरजाकाका
हीजीये ॥ सवहोतविधिंवसरी ॥३॥ राजुलकहैंन्मबरीहूं
मऊकरैंतपरी ॥ जगजालजसिवथानलेसंगसांतहि
तकरी ॥४॥ न्मथरागजेजैवंती ॥ ऐरीमाईन्मायोरीबु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कौ ॥ सो लाडूं इस मोन राजरहे वा गार कुमारी ॥ नेंम कौ ॥ २ ॥
कुंवर रस्लाऊ फोन्डरराई ॥ ताल मेरे नाथ दोल कांई ॥ फेरो कांस
जलदी आई ॥ जांन देषत हीसु अपार्ई ॥ दोहा ॥ उग्रसेन ज
दुव कें ॥ मन में कीयो विचार ॥ पसु जीवन हू कीरे ऐक वा
वाडा नरया अपार ॥ करि हैं भोजन कौ सारी ॥ नेंम कौ ॥ ३ ॥ नि
कटि जब तोरण के आये ॥ पसु जो वंधवर ही व ललाये ॥ नेंम जन
वचन जु फुरमाये ॥ पसु जीव कारे हूं ल्याये ॥ दोहा ॥ इनके
भोजन होत हैं ॥ जांन दषात कौ सोर ॥ इतनो वचन जसुन्यो नेंम
जी ॥ फिरे हस्तको प्या जोर ॥ लाग का च्या न्यागार नारी ॥ नेंम की
४ ॥ लाखें सुरा जलदी आई ॥ हा पजव पकडनो है माई ॥ कांस
तु जावे भेरी जाई ॥ और वरहे हूं मुकताई ॥ दोहा ॥ मेरा वरतो रे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रागपदसंपूरण॥ पद आव॥ २६ ॥ अथ श्री नेमि
नाथजी स्वामी को विवाह पदी अष्टचरणी दोलतराम
जी कृत लिष्यते॥ अथ लावणी॥ नेम की जान बनी भारी
देषन कूं आए नरनारी॥ टेक॥ अनंता घोडा अरहाती
मनस की गिनती नहीं आती॥ ऊंट पर धजा जो फरराती॥ बे
मष कसुन धरती थिरराती॥ दुहा॥ समंद विजे जी का लाडु
ला॥ नेम कंवर जी नांम॥ राजलदी कूं आए परनवा॥ उग्रसे
न के मांहि॥ परसन भई नगरी सब सारी॥ २॥ कसुंमल बगो
अति भारी॥ कोरगोटा की छबि भारी॥ मोरन मोसा की ग
लधारी॥ कलंगी सोवत सुषकारी॥ दुहा॥ ॥ कानां कूं
डल झगमगे सीस सेवरो जांन॥ कां हां लग कहुं वोथ मां जपा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥नेम॥
॥५१॥

धरीयो निर्मलध्यान॥ नवलीनराम गोवली गाई॥ रूपज्योकेव
लज्ञान॥ मोषकावा ज्या म विलेरी॥ नेमकी॥८॥ इतीश्री
नेमनाथजीकी अष्टपदीसंपुर्ण॥ कृतदोलतरामजी
समापते॥ पद भागचन्द जी कृत: राग काफी.
कब मैं साधु स्वरूप धरूंगा टेक बंधु वर्ग मैं मोह
त्याग हूं मन जनकादि सौं बच्च उचरूंगा॥ टु
जन कान्ह देह संबंधी मैं तुम सेउप जानन मरूंगा
टेक अंगुष्ठ न कोट मान खजबन सुवदु षषप
त्रिगुण पब्वन चिचरूंगा अंतर मुर्छा त्याग
नगन हो बा हिज न ताकें दुःखुउरूंगा टेक दुर्जन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कही॥ होइगी या नेमकवरजी नाम॥ इजावर कवकुं न हीस्रणं को
हिककरोजीतुपाइ॥ जरुणी... हीमइ तारी॥ नेमकी॥ ५॥ सइ यां
सबही संमझावै॥ दाय राजुलके न हीं आवै॥ जमतसु वकेवोसर
सावै॥ मेरमन नेमकवर भावै॥ दोहा॥ कंकनांचुरस्यो फोडकैं
तोड्या नौसरहार॥ काजलटीकीपानसुपारी॥ छोड्यासबयरिवा
र॥ सुहे स्यांवलबनहैं सारी॥ नेमकी॥ ६॥ तज्याहे सो आसनगारा
आभूषणरतनजडुतनारा॥ अबवसुबलागतहै षारा॥ छांडवि
निचालीनिरधारा॥ ... ॥दोहा॥ मातपितापरवार हं॥ न
जतनलागीवार॥ वेगीदोजु ... मिलोजाइपीवसैं॥ जास्यवदीगार
नार रोवतजोमेलैम तारी॥ नेमकी॥ ७॥ नेमराजुलदीज्योमां
ही॥ देष्याजनजेसी विधिमांही॥ रपादलपसुवनकीआई॥
साम्हकी न्हैहैं छिनमांही॥ दोहा॥ नेमराजुलगिरनारीयें॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नी भावना भावै सार सहैं परीसह बीस द्वै चारित्र
तन अंतर वे गुरु ४ ग्रीषम रितु रवि तेज सौं सूकैं
तरवर नीर सैल सिषर मुनि तप तपैं दाझैं नगन
शरीर वे गुरु ५ पावस रैन डरावनी बरसै जल
धर धार तरुतल निवसैं साहसी बाजैं झंझा
वाय वे गुरु ७ सीत पड़ैं कपि मद गलैं दाहैं सब वन
राय ताल तरंगनि के तट वसैं ठाढ़ें ध्यान लगाय वे
गुरु ८ इहविधि दुद्धर तप तपैं तीनों काल म
झार लागि सहज स्वरूप सौं तन सौं ममत नि
वार वे गुरु ९ गज वाघ बन तें गरज सौ सैना
साजि चतुरंग निरख राग वैधर्य पालै कहीं ना
भंग वे गुरु १० इंद महा नर्द सौं थते सुर सैन
किंनर तै पाय मनि सम भूम म सोव सेवक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेगुर ११ पूरव भोग न चिंतवे आगम वांछै
नांहि चहुगति के दुख सौं डरै सुरति न लंगी हि न
मांहि वेगुर १२ वेगुरु चरन सहा धरै म
ग मैं तीरथ नेह तो रज मम मसतक चढै सूं
दर मांजी यह वेगुर वे ते उरधन सो : भया की
नेती भव बन की। भव बन दीरघ के विषै भरम्यो
अधिकाई और कुल संजोग ते उपज्यो नर
पाय जैन धर्म न पायो तो ऐसौ १ सुव जग की
रूप को संभ्रे ने रातन तृकीय ने ते साधी धर्म
है निस्संकर जोरि। जैसे १२ कार। और सब कल
तब संपदा पाई बहु बार जिन गुन संपत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनारसी को जीव के नितायवे को कारन
सतायवे को भवउद्धारनी है जहां तहां त्या
रवै को पार केउतारने की सुलनि सा इन
की महीं जिनवानी है ॥ सवैया ३१ ॥ छनी नैन
वानी जिन जानी तिन्यो राज देषन ते धन्य
धन्य जिन जानी मंमे गाये हैं यह हम तन
ए सानी जिन [illegible] जानी ते महाकुष मा
नी भव भ्रमर में भ्राये हैं याही जिनवानी
केतवाइ जिन्हें चाखो तिन्ने ते ई महांराज
पद करम नसाये हैं ताते द्रग खोलन मैं था
के है जिनवानी नैनि ऊपके संमुष ... याही
में नापे हैं ॥ छंद ... जिनवानी की ...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेगुरमेरेउरबसो ३ भवजलधिजिहाज आप
तिरै भव्यतारिवे औ हे श्री मुनि सेव वैगुरमेरे
रवसो टेक मोह महारिपुजीनि कै अंशो लव धं
जार होय दिगंवर वन वसे आतम सुध विचार
वेगुरमेरे उर वसो १ रोग उरग विलवपु गिनें
भोग भुजंग समान कदली तन संसार है लव छा
ग्यो ह म जानि वेगुरु २ पंच महाव्रत आदरै पांचो
समित समेत तीन गुपति जापें सदा अजर अमर
पद हेत वेगुरु ३ रत्नत्रय निधि उर धरै अरु नि
र्ग्रंथ त्रिकाल मीरो का मपिसाच को स्वामी
परमदयाल वेगुरु ४ धान धरे इस काल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमगुन चिन्तत निजपर विवेक प्रगटै विघटै
आपद अनेक तुम जगत भूषन दूषन वियुक्त
सब महिमा युक्त विकल्पमुक्त ४ अविरुध
सुध चेतन स्वरूप परमात्म परम पावन अनूप
सुभ असुभ विभाव अभाव कीन स्वा
भाविक परनति मै अछीन अष्टादश दोष
विमुक्त धीर स्वचतुष्टय मय राजत गंभीर
मुनिगणधरादि सेवत महंत नव केवल लब्धि
रमा धरंत ६ तुम शासन सेय अमेय जीव
शिव गये जाहि है सदीव भवसागर मैं दुख
क्षार वार तारनको और न आप टार ७ या अ

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पापनी इ...ज्यों संसार जैन टेक २ करनी
तीयसी करत्व ही औसर वह पाप फिर यह पाव
जिनै न हि पीछे पछतांय जैन टेक २ जिनवानी
सुनें सुधा सम जिन ते ई कान न... यह
जी मये मनिये भगवान। जैनधर्मको
यो दोहूं जी ॥ अथ दोलतराम कृत स्तुति ॥ सकल
ज्ञेय ज्ञायक तदपि निजानंद रस लीन सो जिनेंद्र
जैवंत नित अरि रज रहस विहीन ॥ टेक ॥
जै वितराग विज्ञान पूर जै मोह तिमर को हर
न सूर जै ज्ञान अनंतानंत धार दृग सुख वीरज
मंडित अपार २ जै परम शान्त मुद्रा समेत भ
वि जन को निज अनुभूति हेत भवि भागन
वश जोग वशाय तुम धुनि व्हे सुनि विभ्रम नशाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुख गद हरन काज तुमही निमत कारन
इलाज जाने तातें मैं सरन आय उचरों निज दुख
जो चिर लहाय ८ मैं भ्रम्यो अपनपो विसर आप
अपनाये विधि फल पुन पाप निजको पर को
करता पिछानि पर में अनिष्टता इष्ट ठानि आकु
लित भयो अज्ञान धारि ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि
वारि तन परनति में आपो चितार कबहु न अनुभ
वो स्वपद सार १० तुमको जाने बिन ज्यों कलेस
पाये सो तुम जानत जिनेश पशु नारक नर
सुरगति मझार धर धर भव मरस्यो अनंत बार
११ अब काल लब्धि बल ते दयाल तुम दरसन
पाय भयो खुस्याल उर सांत भयो मिट सकल द्वंद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भयो आतम सरूप जानिके ॥ २ ॥ तातें मैं सो अब
कहूं नाथ विधि इनकी मुनि वारन काज
तुम गुनन को नाहिं छिन देव अज्ञातारन को
तुम विरध पन आतम के हितनि मैं कहा
य इनमें मेरी परनति नाय मैं तुम जाप मेंआ
पलीन सो करो होइ औ निजाधीन १४ भेद
न है नाई के थु. और हित रत्नत्रय निधि ही मे
मुनी हो दुख कारन के कारन औ पाप होन
के ते हरे मम मोह नपाप पुनि हानि कर नित प
हरमे है त का पेवं तवा तुम कृपा ते तें पवित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रु इंड धम्मसरूव जाणवि अद जीवदया वयसाहे
राखिज्जइ सत्तु ठाणमश्थीरु किज्जइ
मिच्छमयई पवेस णा दिज्जइ । धीवन
सालिव धाराहि सिंचिज्जइ सम पयन
वड्ढारिज्जइ ॥ घत्ता ॥
को हाणल उक्किउ, होउ गुरुक्कउ, जाइ
रिसिंदइ सिद्धगइ ॥ जगणाइ सुहंकरु
धम्म महातरु, देइ फलाइ सो मिट्ठ मई

(स) नरईकर्मों की निर्जरा करके जो भव ... जो
को नष्ट करते हैं वे संसार रहित अजर और
अमर सुख को प्राप्त करते हैं ॥ ॥ जैसे
... फल प्राप्त होता है उसी धर्म का पा...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करना चाहिए। इस दस लक्षणी धर्म रूपी कल्प वृक्ष का
पत्थर पर(?)
है इसकी क्षमा तो एक जड़ है मार्दव पल्लव हैं (को
मल पत्ते) हैं, आर्जव सारना है, सत्य और सौच
[illegible] है संजम पत्र है जो प्रकार तप रूप पुष्प हैं
चार प्रकार दान रूप सुगन्ध फैल रही है
व्यंजन और ई सुन्दर बैनर रूप पकने हैं
जो कलिकाल से हाक कर के हैं सौ के 5 प्रकार के
रूप फल हैं तीन जगत के जीवों के श्रम को
मिटाने वाले जिसका इष्ट और सौम्य हारी
रमान्त परि गहे हैं, जो ब्रह्मचर्य रूप छाया से
युक्त है और इसके मूल में आप स्वयं हैं॥ इस
प्रकार यह दस लाक्षणिक रूप वृक्ष है इसकी रक्षा
करनी चाहिए [illegible] जीव दया रखनी चाहिए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मसु श्री रोग नाम श्री तुम स्वरूप अनुभव ते भव
नसाय ।१८। त्रिभुवन तिहु काल मझार कोय
नाहि तुम बिन निज सुखदाय कहै मो उर
यह निश्चै भयो मान दुख जलधि उतारन
तुम जिहाज ।१९। दोहा तुम गुनगन मनि
गनपती गनत न पावै पार दौल स्वल
पमति किम कहै नमै त्रियोग सम्हार ।२०।
संपूर्ण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसुलवे सील मै मोल-समुद्र पयासरं सी:
श्य काउंनरिकिजरं जेइसुंति भव पिंजरं।
वीरेयं अजरामर रुनेलहं नसुक्खं पयं॥
जेस मोक्खफलं नेपाविज्जाइ, सोधम्मोज
एहुकिज्जरं। वेमलमांपलु तुंगयदेहउ,
महइयपलंउ, पलउ साउअं॥ सव्वेसत्वा
मूलसंजमदलु, डुवेहमहालव एवकुसं
मालु। वउनिहचाउपसाहियपरमलु, पीणि
यभववीसहछप्पयकुलु॥ दिसंकोहसघकेलकज
फलु सुरनरवरखेयरेहिसयफलु, दीसबह
दीहसमालिंगइ. सदुसोमनसु मनपोरगइ
वेमचेकछाया सुहानसउं रायहंस नियरेहि समासिउ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टेक ॥ मार गयो धर हूं नाहिं पावै ॥ कहु मति भाजन कुं
जावै ॥ वैराग्य सुजन सनमुख धावै भव सागर
तें तार ॥ टेक ॥ पद ॥ मैं जन न राम कहं ॥ तुम हो कर
म दयाल जग जन गुरु । मैं भव में ढूंढत आयो हूं ॥
मोह महा दुठ घेर लैयो । नाहिं भव का मैं न
भटकायो है । मैं निज ज्ञान चरन निधि बिन
सौ तन धन पर अपनायो है ॥ टेक ॥ निज आनंद
धन भव बिहुन तजि विषय लिनो दुख सांचो है
मेरी भूल न भ्रम न दुख बेड़ा [illegible] नाहिं बिध
थायो है ॥ टेक ॥ लाडु दीन सिध निज मुद
ग और नहिं न लखायो है । है बंध रूप छिव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाडेसक तुम लुनस म. नोग न गाज्ञा हू ॥ टेक॥
तुम ही सहज न [illegible] । निमेन न मूरति नके मे उर
निश्चै भाया हूं । जिन्न होजु निज नै हीकी
नै दोन तु है । सिर नाया हूं ॥
जिन बैनस नन म्हारी भूल न भली टेक कर्मसुभा
व भाव चेतन को भिन्न विछांनन न लुभत जगी
टेक ॥ निजवत भति सहज व्यापकता सो चिह
रूप तुव मैं निपायी । स्याद् वादि धुनि निर्म
लजन ते चिन मन भई समभाव जगी ॥ टेक
ससम मोह भरम ता विघटी प्रगटी ज्ञातम सोंग
तागी दौलत अपूरब मंगल पायो शिव सुख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इति श्री ...

न स्नेहा ... [illegible] भगवन्नाद्य ते ...
हेतु ... [illegible] संसार घोरार्णव:
... [illegible] ...
... [illegible] ...
...वी: ॥१॥

~~अत्यन्त स्फुरदुग्र रश्मि निकर व्याकीर्ण भूमंडलो । ग्रैष्म: कारयतीन्दु पादसलिलच्छायानुरागं रवि:~~
कुद्धाशीविषदष्ट दुर्जयविषज्वालावली विक्रमो । विद्याभेषजमन्त्र तोयहवनैर्याति प्रशांतिं यथा ॥
तद्वत्ते चरणारुणांबुज युगस्तोत्रोन्मुखानां नृणाम् । विघ्ना: कायविनायकाश्च सहसा शाम्यंत्यहो विस्मय: ॥२॥
सं[illegible]त्तम कांचनाद्रिति धार श्री स्पर्द्धि गौरद्युते । पुंसां त्वच्चरण प्रणाम करणात्पीडा: प्रयान्ति क्षयं ॥
उ[illegible]स्कर विस्फुरत्कर शतव्याघात निष्कासिता । नानादेहि विलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥३॥
[illegible] मोह मंगल [illegible] जयादत्यंत रौद्रात्मका । नानाजन्मशतांतरेषु पुरतो [illegible] ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रस वृक्ष के नीचे बैठने से ध्यान का ज्ञान
बनाना चाहिये यहां मिथ्या मत का प्रवेश
न होना चाहिये और शान्त रूप जल को
धारा से सींचना चाहिये इस तरह यह
बढ़ना चाहिये।
क्रोधरूपं अग्नि को बुझावो और बनो
सारे जगत को हर्षित करने वाला यह ध
र्मरूप वृक्ष है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साथ सदानके नोफिटै अनाथ धर्मिनके सदा
पुद्गलनितैरहै भर्मबुधि नैनइ नागहैं वैं रूपी
पुद्गलनके संध बुधि न मूरत सदा अबंध
६॥ पहुचि दौषि देहादि कुसंग कौन कुवन
नजीनौ संग पला नासरु थिरादि कपै इ
भव नम्रबनन नै षिनजु सनेहु ७ आश्रव
सो कौन प्रौत भानै बंध न्हौ विपरीत
रूपी पुंगल कौ बंध बुधि न मूरत सजा
पबंध जैसा परको रोकन भाव हुलहावै
को यहै पावै पान नाहि नवै जहां कर्म छिदै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं सुने ॥ टेक ॥ अथ बारा भावना लिखते
पंचपरमपद वंदन करौं मन वच भाव लगाय ज
हां बारा भावना भावना [illegible] भावो आनमगु
न [illegible] ॥१॥ थिर नहिं दीसे नैनन वस्तु देहा
दिक [illegible] थिर नहिं नेहि कौन ते
करो [illegible] पारहूत २ [illegible]
[illegible] नहिं कोय तीन लोक में दूजा [illegible]
न कोइ न तेरो राखनहार कर्म बस है [illegible]
धार २ अरु संसार भावना येहि पद [illegible] की
[illegible] चेतन [illegible] ३ [illegible] नाते [illegible]
[illegible] ४ [illegible]
[illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एही बारह भावन सार तीर्थंकर नाम [illegible] हो
य वैरा[illegible] उपजत लेइ नव भव भ्रमन न जथा मुक
ति है भा[illegible]भावना भावनमन भावन हो य वृ
रत शिवरूप सुख अनंत जिनसे निरंजन
राम भाषै स्वामी जगदीश: ॥ अथ पारसनाथ
स्तोत्र लिख्यते ॥ नरेन्द्रं फणेन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं
सतेन्द्रं सुपुज्यं भजे नाय शीसं मुनिंद्रं गनेन्द्रं न
मो जोर हाथं नमो देव देवं सदा पार्श्वनाथं ॥ १ ॥
गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गहे तू छुडावै महा आग ते नाग ते
तू बचावै महावीर ते जुध्य में तू जितावै महा रो
ग ते बंध ते तू छुडावै ॥ दुषी दुषहर्ता सुषी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इकै प्रकृतीनि न धरै १० चित मूरति करि करि
फिरि माय निर्जरा भाव अधिक अधिकाय
निर्मल होय चिदातम आप मिटै सहज पर
संग मिलाप ११ लोक माहिं तैं रे कछु नाहिं
लोक आनि तुम आनि लखाहिं वंह षट द्र
व्यन को है धाम तुचिंतन मूरत आनम राम
१२ धर्म सुभाव सुभाव जान आद सुभाई ध
र्म सोई मान जब पाई धर्म प्रगटै निज होय
जब परमानम पद लेहि सोय १३ दुर्लभ पद
को एक न भाव सो तो दुर्लभ सुन हो राव जो है
ज्ञान अनंत सो नाहिं दुर्लभ सुन्त हो मन हैं ॥ १४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्यान तन्त्रीत निहार के की जै पापनसमान
स्तुतिः॥ प्रभु पतित पावन मैं अपावन चरन आयो
शरण जी। यो विरद आपनो निहार स्वामी मेट जामन
मरन जी॥ तुम ना पिछान्यौ आन मान्यौ देव
विविध प्रकार जी। या बुद्धि सेती निज न जान्यौ
भ्रम गिन्यौ हितकार जी॥१॥ भव विकट वन में
कर्म वैरी ज्ञान धन मेरो हर्यो। तब इष्ट भूल्यो
भ्रष्ट होय अनिष्ट गति धरतो फिर्यो॥ धन घडी यो धन
दिवस यो ही धन्य जनम मेरो भयो। अब भाग मेरो
उदय आयो दरस प्रभु को लखि लयो॥२॥ छवि वीत
रागी नगन मुद्रा दृष्टि नासा पै धरै। वसु प्रातिहार
अनंत गुन जुत कोटि रवि छवि को हरै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वा निं तो ति मह। मिथ्यात्व मे हे उदय होनें जोग
मनमां [illegible] भया हैं नुहें कैं निन
मनिनेवा [illegible] नेवां च मह तक [illegible]
कें हे मै [illegible] परमो कृष्ट हैं [illegible] कपृ ति
न सुनी न [illegible] नी [illegible] खरनात
[illegible] न पर जन सा धर्म कुधर्मा [illegible] हैं
हुम मैं [illegible] मंच मच [illegible] नाव [illegible]
[illegible] मिथ्यात्व न ना सिवे को [illegible]
कृ मृ गहू वे को [illegible] सिवे को भो [illegible]
सानी [illegible] छहों दुव नामि [illegible] बंधा [illegible]
को [illegible] परम गुणा नी हैं [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तानें चरण न वीर जिनंद न पं बा बार करूंगा ।वा
वत निश्चल होय आप में पर परणति न तजूंगा ।
टेक ॥ चाख सम्यक ज्ञान सुधारस चाह दाह में नाहि
जरूंगा । हिंसक वचन गुरु को ... पर
मात मधु से न टहूंगा ॥ ... नी नं
... पथा नत रहूं हो फिर ... भ ... गा
भाग चलूं । ... य ... ती ... नें न ... भ
... पडूंगा ॥ २॥ तुम गुन अपरंपार ... नी गी
तुम गुन अपरंपार ... विकार ...
... ॥ अबै तुम जग में मोक्ष ... रे । सब ... न ...
... रे । ... ये ... न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमोघ सुधार ॥टेक॥ जंम प्रभु जनमे जंबद्वी
पा। न्हवन मंदिर पै इंद्र कीना। भक्तरस लीन
हि तीना। बल्यो जय जय कार ॥टेक॥ नेमन
छिन भंगुर जब जाना। स्वर्ग ते लोकांतिक
सुर आना। भये तब वृती जब वन जाना। ध्यान गुन
का ना ॥टेक॥ घातिया प्रभु ने जब नाशी। भ
ये केवल ज्ञानी। कीनो धर्म प्रकाश हू
पासी। केवल ज्ञान भंडार ॥टेक॥ अघाति
कर्म हत शिव पाई। सिद्धां ना तब ही पा
ई। नरा कुल जनम तू सहाई। जीन ...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५॥ तुही कल्पवृक्ष तुही कामधेनु तुही दिव्य
चिंतामनी नामरतु पस्त नर्क के दुष से तु
ध्रुव तै महा स्वर्ग मैं मोक्ष मैं तु बसावे ७ करे
जो तु कोटि त्रैन पाषन नामी रंदै नाम लेके न
ते साफ गामी करे सेवता की करे देव सेवा
सु नैवैन सोई जिन्है तीन मैं वाजनी जाप
को कहा ताजो धरै ध्यान ताके नवे
जप भाव विना तोहि ताने धरै मन व
ने हैं तिहारी कृपा ते सरै काज मेरे दोहा
गांधत है नैनं करत नै तुम विलीमजगान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वकरतो सर्व संव का को महानंद करता. दूर
वंछ राक्षस भूत पिशाच विषम डाकनी विघ्न
कै भयवाने अविघ्न को द्रव्य को दीना
अपुत्रीन को ते भले पुत्र दीना महासंकट ते
निकालने वाला सर्व संपदा सर्व को दे
ता ४ महावीर को वज्र को भय निवारे
महापीन के पुंज नेतु उद्धारे महाक्रोध
मान को मेघधारा महालोभ [illegible] है नहीं
वज्र मारा ५ महामोह अन्धेर को भानु
महाकर्म कंतार को दो प्रधान को [illegible]
पधा लोक स्वामी हरि मानने [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[illegible] काले [illegible] दानन्ता । [illegible]
[illegible] आपद्य [illegible] ॥ ४॥
लोकालोकनिरन्तरप्रविततज्ञानैकमूर्ते विभो । नानारत्नपिनद्धदण्डरुचिर
श्वेतातपत्रत्रयम् ॥
त्वत्पादद्वय पूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः । दर्पाध्मातमृगेन्द्र
भीमनिनदाद्वन्या यथा कुंजराः ॥ ५॥
दिव्यस्त्रीनयनाभिराम विपुल श्रीमेरुचूडामणे । भास्वद्बालदिवाकर
द्युतिहर प्राणीष्ट भामंडलम् ॥
अव्याबाधमचिंत्यसारमतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतम् । सौख्यं त्वच्चरणार
विंदयुगलस्तुत्यैव संप्राप्यते ॥ ६॥
यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो भासयं- स्तावद्धारयतीह
पंकजवनं निद्रातिभारश्रमम् ॥
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्रसादोदय- स्तावज्जीवनिकाय
एव वहति प्रायेण पापं महत् ॥ ७॥
शान्तिं शान्तिजिनेन्द्र शांतमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात् । संप्राप्ताः
पृथिवीतलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः ।
कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो दृष्टिं प्रसन्नां कुरु ।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शांत्यष्टकं भक्तितः ॥ ८॥

—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[illegible]

इंसण मइभिभइ इंसण भइस्स ए सि ज्झंति
सिज्झंति चारिमं भद्दा इंसण भट्ठा ण सिज्झ
ति:
जइ इंदियेसु कायें जो जो बे इंक साय ण ऐय
संजम इंसण लं भविया सम्मत्त स हिया
साहारे ॥

[illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi